सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक बड़ा फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि एक तलाकशुदा मुस्लिम महिला दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता पाने की हकदार है।

जनहितैषी

जनहितैषी अब janhitaishinews.com पर भी

हिन्दी दैनिक

R.N.I. No. 64278/96 वर्ष:29 अंक: 68 दिनांक:11-07-2024 गुरूवार मूल्य : 1 रूपया 50 पैसा पृष्ठ:4 वडोदरा M

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्रों के प्लेसमेंट और वार्षिक पैकेज में कथित तौर पर गिरावट को लेकर बुधवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि भाजपा की शिक्षा विरोधी नीयत के कारण मेधावी युवाओं का भविष्य अधर में है।

सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, मुस्लिम महिलाएं भी गुजारा भत्ता मांगने की हकदार

कानून ऐतिहासिक शाह बानो केस का नतीजा

नई दिल्ली (ईएमएस)। सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के हक में बड़ा फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मुस्लिम महिलाएं भी सीआरपीसी की धारा 125 के तहत अपने पति से गुजारा भत्ता लेने के लिए याचिका लगाने की हकदार हैं। तेलंगाना के एक मुस्लिम शख्स ने अपनी तलाकशुदा पत्नी को भत्ते के रूप में 10,000 रुपये देने के हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी थी। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया है। जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह ने अलग-अलग लेकिन एकमत से फैसला सुनाकर कहा कि धारा 125 सीआरपीसी सभी महिलाओं पर लागू होती है। उन्होंने कहा कि अगर किसी मुस्लिम महिला को धारा 125 सीआरपीसी के तहत आवेदन के दौरान तलाक दे दिया जाता है, तब वह मुस्लिम महिला (विवाह पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 के तहत गुहार लगा सकती है, जो अतिरिक्त उपाय प्रदान करता है।

जस्टिस नागरत्ना के हवाले से कहा, हम इस आपराधिक अपील को इस अहम निष्कर्ष के साथ खारिज कर रहे हैं कि धारा 125 सीआरपीसी सभी महिलाओं पर लागू होगी, न कि केवल विवाहित महिलाओं पर। उन्होंने कहा कि अगर मुस्लिम महिला तलाकशुदा है और पीड़ित महिला ने धारा 125 सीआरपीसी के तहत आवेदन किया है, तब वह मुस्लिम महिला (विवाह पर अधिकारों की सुरक्षा) अधिनियम, 2019 का सहारा ले सकती हैं, जो अतिरिक्त राहत प्रदान करता है। शीर्ष अदालत ने मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकारों की सुरक्षा) अधिनियम, 1986 के बावजूद तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं पर आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के लागू होने की फिर से पुष्टि की है। यह कानून ऐतिहासिक शाह बानो केस का नतीजा है, जहां अदालत ने धारा 125 सीआरपीसी को एक धर्मनिरपेक्ष प्रावधान के रूप में मान्यता दी थी, जो मुस्लिम महिलाओं पर भी लागू होता है।

अब तक पर्सनल लॉ के आधार पर बने कानून के तहत तलाक होने के बाद 90 से 100 दिनों की इद्दत यानी एकांतवास की अवधि तक ही मुस्लिम महिलाएं अपने पूर्व शौहर से गुजारा भत्ता पाने को हकदार हैं। इसके बाद उन्हें गुजारा भत्ता नहीं मिलता। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने शाह बानो के मामले में फैसला सुनाया था कि मुस्लिम महिलाएं भी अन्य महिलाओं की तरह गुजारा भत्ता मांगने की हकदार हैं।

कोर्ट ने कहा, बहुत हुआ......बैरिकेड हटाकर चंडीगढ़-दिल्ली नेशनल हाईवे चालू कराएं

हरियाणा सरकार को एक सप्ताह का समय

चंडीगढ़ (ईएमएस)। हरियाणा के अंबाला जिले में शंभू बॉर्डर में चल रहे किसान आंदोलन को लेकर बड़ी खबर है। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने बुधवार को बड़ा आदेश दिया है। हाईकोर्ट ने हरियाणा सरकार को बॉर्डर से बैरिकेड हटाने का आदेश हैं। इसके बाद अब चंडीगढ़-दिल्ली नेशनल हाईवे खुल जाएगा। जानकारी के अनुसार, पांच महीने से हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर पंजाब की ओर किसान धरना दे रहे हैं। इस वजह से शंभू बॉर्डर पर केंद्रीय सुरक्षा बल और हरियाणा पुलिस के सैनिक तैनात हैं। दिल्ली चंडीगढ़ नेशनल हाईवे का कुछ हिस्सा बंद है। इसकारण अंबाला में कारोबार को असर पड़ रहा है। इसके साथ ही रोजाना आवाजाही करने वाले लोगों को बड़ी समस्या आ रही है। इस कारण हाईकोर्ट में बॉर्डर खोलने को लेकर याचिका दाखिल की गई थी।

सुनवाई कर कोर्ट ने हरियाणा सरकार से कहा है कि एक हफ्ते में शम्भू बॉर्डर को खोला जाए। हाईकोर्ट में दायर याचिका में कहा गया है कि किसानों के आंदोलन के कारण पिछले 5 महीने से एनएच-44 बंद पड़ा है और इससे जनता को भारी परेशानी हो रही है। सुनवाई के बाद हरियाणा के वकील दीपक सबरवाल ने बताया कि बॉर्डर के पास 400 से 500 किसान धरना दे रहे हैं और हरियाणा की ओर से पंजाब को धरना देने के लिए तय जमीन देगी और सरकार बैरिकेडिंग खोल देगी। हरियाणा सरकार के वकील ने बताया कि अगर किसान हाईवे पर बैठने की कोशिश करते हैं, तब उन्हें हटाया जाएगा। उन्होंने बताया कि कोर्ट ने लॉ एंड ऑर्डर को पंजाब सरकार को भी आदेश दिए गए हैं। हरियाणा के शंभू और खनौरी बॉर्डर पर किसान फरवरी महीने से धरना दे रहे हैं।

एक्सप्रेस-वे पर दर्दनाक हादसा, 18 की मौत, कई घायल

उन्नाव (ईएमएस)। उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में बुधवार सुबह लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे भीषण सड़क हादसा हुआ। डबल डेकर बस एक टैंकर से टकरा गई। टकराने के बाद हाईवे पर बस कई बार पलटी। दर्दनाक हादसे में 18 यात्रियों की जान चली गई, जबकि 19 से अधिक यात्री घायल हो गए हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है।

प्राप्त विवरण के मुताबिक डबल डेकर बस बिहार के शिवगढ़ से राजधानी दिल्ली जा रही थी। जैसे ही स्लीपर बस लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे पर बेहटा मुजावर थाना इलाके में हवाई पट्टी पर पहुंची तो दूध से भरे टैंकर में भिड़ गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस के परखच्चे उड़ गए। जिस जगह पर हादसा हुआ, वहां लाशों का अंबार लग गया। सड़क पर लाश ही लाश दिखाई दे रहीं थीं। मौके पर चीख-पुकार मच गई। हादसे में एक बच्चे और महिलाओं समेत 18 यात्रियों की मौत हो गई। जबकि 20 यात्री गंभीर रूप से जख्मी हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया। शुरुआती जांच में पता चला है कि बस की स्पीड अधिक थी।

लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे पर बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र के गढ़ा गांव के सामने हुए सड़क हादसा के बाद घायलों को अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। वहीं, पुलिस ने कुछ मृतकों की शिनाख्त कर ली है। उन्नाव के जिला अधिकारी गौरांग राठी ने कहा कि दिल्ली जा रही एक निजी बस में करीब 57 यात्री सवार थे। सुबह 5:15 बजे बस की दूध के कंटेनर से टक्कर होने से 18 लोगों की मौत हो गई और 19 अन्य घायल हो गए। करीब 20 लोग सुरक्षित हैं, जिन्हें दिल्ली भेजा जा रहा है। छह लोगों को ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया है, बाकी का इलाज जिला अस्पताल में हो रहा है।

46 साल बाद 14 जुलाई को खुलेगा जगन्नाथ मंदिर का खजाना भंडार

पुरी (ईएमएस)। पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर का खजाना भंडार जहां मंदिर के बहुमूल्य रत्न रखे गए हैं, वे 46 साल बाद ओडिशा सरकार ने 14 जुलाई को खोलने का ऐलान किया है। हाई लेवल कमेटी मंदिर के अंदर रखे गए खजाने की जांच कर बहुमूल्य रत्नों की लिस्ट बनाकर ओडिशा सरकार को देगी। इस समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) बिस्वनाथ रथ ने अन्य सदस्यों के साथ बैठक में यह बात कही। उन्होंने बताया कि आंतरिक रत्न भंडार खोलने का सर्वसम्मति से फैसला हुआ। जिसकी तैयारी हो चुकी है।

मंदिर के रत्न भंडार में 12वीं शताब्दी के बहुमूल्य आभूषण हैं। जो लंबे समय से भक्तों और राजाओं द्वारा भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा को भेंट किए गए। यह रत्न भंडार मंदिर के काफी अंदर स्थित है। इसमें दो कमरे हैं आंतरिक और बाहरी कक्ष।

जब जगन्नाथ जी और उनके भाई-बहन के सुंदर स्वरूपों को स्वर्ण पोशाक पहनानी होती है, तब बाहरी कक्ष खोला जाता है। प्रत्येक वर्ष जगन्नाथ यात्रा के दौरान यह एक प्रमुख अनुष्ठान होता है। केवल प्रमुख त्यौहारों के दौरान ही कक्ष के द्वार खुलते हैं। 2024 से पहले 1978 में रत्न भंडार में जमा खजाने की सूची तैयार की गई थी, लेकिन जब 1985 में फिर से खोला गया तब कोई नई सूची नहीं बनाई गई थी।

12वीं सदी के नियमों के मुताबिक जगन्नाथ मंदिर के रत्न भंडार को खोलने के लिए राज्य सरकार की मंजूरी चाहिए है। इसका प्रस्ताव मंदिर प्रबंध समिति के द्वारा आता है। हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में बीजेपी ने बड़ा मुद्दा बनाकर रत्न भंडार खोलने का वादा किया था। राज्य में सरकार बनते ही बीजेपी ने अपने वादे को पूरा करने का काम किया। हाई लेवल कमेटी मंदिर के अध्यक्ष रथ ने कहा कि श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन के मुख्य प्रशासक को रत्न भंडार की डुप्लीकेट चाबी देने को कहा गया था लेकिन उन्होंने नहीं दी। मंदिर प्रशासन हाल ही में हुई जगन्नाथ रथ यात्रा के आयोजन में व्यस्त था। अब 14 जुलाई को समिति को चाबी जमा करने के लिए कहा गया है। ये भी निर्णय हुआ है कि अगर डुप्लीकेट चाबी काम न कर सकी, तब ताला तोड़कर रत्न भंडार के द्वार खोले जाएंगे। आभूषणों की लिस्ट बनाने और रत्न भंडार की मरम्मत के लिए आवश्यक एसओपी पर भी चर्चा हुई है।

लद्दाख में सोने की बड़ी खेप जब्त

चीन से तस्करी कर लाया गया 108 किलो गोल्ड, आईटीबीपी ने पकड़ा, दो गिरफ्तार

जम्मू/लेह (ईएमएस)।केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में सोने की एक बड़ी खेप पकड़ी गई है। आईटीबीपी के जवानों ने चीन से तस्करी कर लद्दाख में लाई गई 108 किलो सोने की खेप को जब्त किया है। इस मामले में दो तस्कर गिरफ्तार किए गए हैं। प्रदेश के जिला लेह के न्योमा सेक्टर में दो आरोपी धरे गए हैं।

21 बटालियन आईटीबीपी के जवानों ने घोड़ों के साथ दो तस्करों से 108 किलोग्राम सोने की खेप पकड़ी। दोनों आरोपियों की पहचान त्सेरिंग चिनबा और स्टैनजिन दोरग्याल निवासी कोयुल, न्योमा के रूप में हुई है।अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास कोयुल गांव में एक व्यक्ति के घर में कई करोड़ रुपये का सोना रखा हुआ था। इसकी खुफिया जानकारी मिल रही थी। इन सूचनाओं पर कार्रवाई करते हुए आईटीबीपी और स्थानीय पुलिस ने सोने की जब्ती की है। दोनों ने कथित तौर पर सोने की तस्करी की और इसे गांव में अपने घर पर रखा। मामले में लद्दाख पुलिस की जांच चल रही है।

महाराष्ट्र में बदली सियासत......अब एनडीए के विधायक रिजार्ट में

शिंदे और अजीत गुट के विधायक कर सकते हैं खेला

मुंबई (ईएमएस)। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे की शिवसेना से बगावत के बाद दो साल हो चुके हैं। उनके बाद पिछले साल ही अजित पवार भी चाचा शरद पवार से बागी होकर शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम बन गए। लोकसभा चुनाव से पहले तक विपक्ष बैकफुट पर दिख रहा था, लेकिन 30 सीटें हासिल करने के बाद विपक्ष फ्रंटफुट पर आ गया हैं। राज्य में विधान परिषद की 11 सीटों पर चुनाव हैं, लेकिन 12 कैंडिडेट उतार दिए गए हैं। इससे साफ है कि क्रॉस वोटिंग होगी। ऐसी स्थिति में दोनों गुटों की ओर से कोशिश है कि अपने विधायकों को एकजुट रखे और दूसरे के तोड़ लिए जाएं।

इस कोशिश में भाजपा और शिंदे की शिवसेना ज्यादा परेशान दिख रहे हैं, क्योंकि उन्हें होटलों की बुकिंग शुरू कर दी है। इससे ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस, उद्धव सेना और शरद पवार से ज्यादा बेचैनी इस बार एनडीए गुट में है। हालांकि इसकी एक वजह यह है कि एनडीए के पास ज्यादा विधायक है। उद्धव और शरद पवार के पास अब एक-एक दर्जन विधायक ही बचे है। वहीं कांग्रेस भी बेफिक्र दिख रही है।

वहीं भाजपा, शिंदे सेना और अजित पवार गुट होटलों की बुकिंग में जुटे हैं ताकि विधायकों को एकसाथ रखा जा सके। ऐसा इसलिए कि क्रॉस वोटिंग का डर है। खासतौर पर शिंदे और अजित पवार के विधायकों के टूटने का डर है। आम चुनाव के बाद से ऐसी रिपोर्ट्स लगातार आई हैं कि विधायक अपनी वफादारी फिर से बदल सकते हैं। इसलिए इन्हें होटलों में रखने की कोशिश है। हालांकि अनंत अंबानी के विवाह के चलते मुंबई में फाइव स्टार होटल फुल हैं और कमरे मिलना मुश्किल हो रहा है। शादी के लिए लिए देश-विदेश से वीआईपी मेहमान आए हुए हैं। इसलिए साउथ मुंबई इलाके के ज्यादातर फाइव स्टार होटल बुक हो चुके हैं।

खबर है कि भाजपा और शिवसेना के विधायकों को अलग-अलग ठहराया जा सकता है। बता दें कि उद्धव सेना ने मिलिंद नार्वेकर को उतारा है, जो उद्धव के करीबी हैं। इसके बाद इसकी प्रबल संभावना है कि शिंदे सेना के कुछ विधायक क्रॉस वोटिंग कर ले। चुनाव में पैसों का खेल चलने की आशंका भी है। हालांकि इसके चलते डर सभी दलों में है।

मायावती ने एसटीएफ रिपोर्ट को बताया राजनीति से प्रेरित

लखनऊ (ईएमएस)। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने हाथरस हादसे पर जारी एसआईटी की रिपोर्ट पर सवाल खड़े कर दिए हैं। मायावती का कहना है कि रिपोर्ट घटना की गंभीरता के हिसाब से नहीं, बल्कि राजनीति से प्रेरित दिखाती है। पूर्व सीएम मायावती ने पोस्ट किया, हाथरस जिले में सत्संग भगदड़ कांड में हुई 121 निर्दोष महिलाओं व बच्चों आदि की दर्दनाक मौत सरकारी लापरवाही का जीता-जागता प्रमाण है। किन्तु एसआईटी की ओर से योगी सरकार को पेश रिपोर्ट घटना की गंभीरता के हिसाब से नहीं होकर राजनीति से प्रेरित ज्यादा लगती है, यह अति-दुखद है। मायावती ने कहा, इस अति-जानलेवा घटना के मुख्य आयोजक भोले बाबा की भूमिका के संबंध में एसआईटी की खामोशी भी लोगों में चिंताओं का कारण है। साथ ही, उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई के बजाय बाबा को क्लीनचिट देने का प्रयास खासा चर्चा का विषय है।

7 राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर वोटिंग संपन्न, 13 जुलाई को होगी मतों की गणना

नई दिल्ली (ईएमएस)। सात राज्यों में 13 सीट पर विधानसभा उपचुनाव के लिए बुधवार को मतदान हुआ। मतदान का समय सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक था। लोकसभा चुनाव के बाद, पहली बार हो रही चुनावी प्रक्रिया में कई दिग्गज अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इनमें हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की पत्नी कमलेश ठाकुर शामिल हैं। मौजूदा सदस्यों की मृत्यु हो जाने या उनके इस्तीफे के कारण रिक्तियों के चलते ये उपचुनाव हो रहे हैं।

उत्तरांखड और पश्चिम बंगाल को छोड़कर, बाकी राज्यों में मतदान शांतिपूर्ण रहा। उत्तराखंड की मंगलौर विधानसभा सीट के एक मतदान केंद्र पर प्रतिद्वंद्वी दलों के समर्थकों के बीच झड़प में चार लोग घायल हो गए। कुछ खबरों में दावा किया गया कि मतदान केंद्र पर गोलीबारी भी हुई। हालांकि, पुलिस ने इनका खंडन किया है।

नौ माह से बर्फ में दबे शहीद का शव निकाला

किन्नौर(ईएमएस)। कश्मीर में एवलांच की चपेट में आए भारत के सपूत रोहित नेगी बीते 9 माह से बर्फ की चट्टानों में लापता थे। परिजन लगातार उनकी सलामती की दुआएं कर रहे थे,लेकिन उम्मीद की सांसे उस वक्त टूट गईं जब सेना को रोहित नेगी का शव मिल गया। शहीद रोहित नेगी का सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कर दिया गया। शहीद रोहित नेगी के पिता अमर सिंह भी भारतीय सेना में रहे हैं। रोहित नेगी अपने पीछे 3 वर्षीय बेटे और 7 वर्षीय बेटी, पत्नी, बूढ़े मां-बाप तथा एक छोटे भाई को छोड़ गए हैं। शहीद रोहित नेगी के पिता पूर्व सैनिक अमर सिंह को जहां एक ओर बेटे के खोने का गम है तो वहीं दूसरी ओर देश के लिए शहादत पर गर्व महसूस कर रहे हैं। डोगरा रेजीमेंट के कमांडेंट ने भी परिजनों को आर्मी के तरफ से हर संभव सहायता का आश्वासन भी दिया।

पतंजलि पर 50 लाख रुपए का जुर्माना

नई दिल्ली (ईएमएस)। बंबई उच्च न्यायालय ने पतंजलि आयुर्वेद को अदालत के अंतरिम आदेश के कथित उल्लंघन के लिए 50 लाख रुपये जमा करने का निर्देश दिया है। मंगलम ऑर्गेनिक्स लिमिटेड द्वारा दायर ट्रेडमार्क उल्लंघन मामले में उच्च न्यायालय ने अगस्त 2023 में एक अंतरिम आदेश में पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड को उसके कपूर उत्पाद बेचने से रोक दिया था। न्यायमूर्ति आर.आई. छागला की एकल पीठ ने आठ जुलाई को कहा कि पतंजलि ने जून में दाखिल एक हलफनामे में उक्त कपूर उत्पादों की बिक्री के खिलाफ रोक के पूर्व आदेश का उल्लंघन स्वीकार किया।

हिट-एंड-रन मामलाः मुख्य आरोपी मिहिर शाह ने कबूली कार चलाने की बात

मुंबई पुलिस के सूत्रों के हवाले से खबर

मुंबई (ईएमएस)। हिट-एंड-रन मामले के मुख्य आरोपी मिहिर शाह ने कथित तौर पर बीएमडब्ल्यू चलाने की बात स्वीकार की है, जिसने एक बाइक को टक्कर मारी और इसमें एक महिला की मौत हो गई। पुलिस सूत्रों ने बताया कि पूछताछ के दौरान, मिहिर ने घातक दुर्घटना के लिए अपने कार्यों और उसके बाद क्या किया, इसका विवरण दिया।

मुंबई हिट-एंड-रन मामले में फरार आरोपी और शिवसेना नेता राजेश शाह के बेटे मिहिर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। कथित तौर पर अपनी लग्जरी कार को एक दोपहिया वाहन से टकराने के दो दिन बाद मिहिर, जो रविवार सुबह से पुलिस से बचने में कामयाब रहा, मुंबई के पास विरार से गिरफ्तार किया गया।

मिहिर की मां और दो बहनों को ठाणे जिले के शाहपुर से पूछताछ के लिए मुंबई लाया गया। पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया कि उनसे और 10 अन्य लोगों से पूछताछ की जा रही है।

मुंबई पुलिस के अनुसार, तेज रफ्तार कार ने कावेरी नखवा को करीब 1.5 किलोमीटर तक घसीटा, इसके पहले कि मिहिर ने कार रोकी, अपने ड्राइवर राजर्षि बिदावत के साथ सीट बदली और दूसरी गाड़ी से भाग गया। पुलिस के अनुसार, मिहिर शाह अपनी कार और ड्राइवर को कला नगर इलाके में छोड़कर ऑटो रिक्शा में बैठकर भाग गए। इसके बाद गोरेगांव में अपनी महिला मित्र के घर पहुंचा।

रामनगर का नाम बदलने की तैयारी...क्योंकि नाम में राम

कर्नाटक की बीजेपी इकाई ने लगाया आरोप

बेंगलुरु (ईएमएस)। कर्नाटक की बीजेपी इकाई ने कहा कि राज्य सरकार रामनगर जिले का नाम बदलकर बेंगलुरु दक्षिण करना चाहती है, क्योंकि इसमें राम है। कर्नाटक के पूर्व उपमुख्यमंत्री सीएन अश्वथ नारायण ने कहा कि कांग्रेस सरकार इस बदलना चाहती हैं, क्योंकि रामनगर के नाम में राम है। ऐसा सिर्फ कांग्रेस सरकार ही कर सकती है। वहीं, केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी के बेटे निखिल कुमारस्वामी ने भी रामनगर का नाम बदलने के पीछे छिपे एजेंडे पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, यह कोई रहस्य नहीं है कि यह नाम परिवर्तन किसकी तुष्टीकरण के लिए किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि यह जिले को रियल एस्टेट माफियाओं के लिए स्वर्ग बनाने की साजिश का हिस्सा है। कुछ लोगों का तुष्टीकरण दूसरा पहलू है। रामनगर जिले की पहचान छीनने की साजिश है, जिसे राज्य की राजनीति में एक विशेष स्थान मिला है। उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से मुलाकात कर बेंगलुरु के आसपास के पांच तालुकों से एक नया बेंगलुरु दक्षिण जिला बनाने की मांग की।

प्रतिनिधिमंडल ने रामनगर जिले का नाम बदलकर बेंगलुरु दक्षिण जिला करने का आग्रह किया, जिसका मुख्यालय रामनगर शहर को बनाया जाए। डीके ने कहा, हमारा उद्देश्य बेंगलुरु शहर के नजदीक स्थित रामानगर, मगदी, कनकपुरा, चन्नापटना और हारोहल्ली तालुकों के लोगों तक बेंगलुरु के वैश्विक शहर की प्रतिष्ठा का लाभ पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि जिले की प्रसिद्धि और गौरव को बनाए रखने के लिए हमने रामनगर, मागड़ी और कनकपुरा में सभी से चर्चा की है और आज मेरे नेतृत्व में हमने सीएम को एक ज्ञापन दिया है, हम चाहते हैं कि इसका नाम राम नगर के बजाय बेंगलुरु दक्षिण जिला रखा जाए, हालांकि राम नगरा जिला मुख्यालय रहेगा।

केजरीवाल की पार्टी को झटके पर झटका दे रही भाजपा

पूर्व मंत्री, विधायक और पार्षद बीजेपी में शामिल

नई दिल्ली (ईएमएस)। दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री राजकुमार आनंद भाजपा में शामिल हो गए। लोकसभा चुनाव से पूर्व दिल्ली सरकार पर अनुसूचित जाति विरोधी बताकर मंत्री पद के साथ ही आम आदमी पार्टी से इस्तीफा दे दिया था।

आंनद ने बसपा में शामिल होकर लोकसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन उनकी हार हुई। बुधवार को वे भाजपा में शामिल हो गए। वहीं छतरपुर के आम आदमी पार्टी विधायक करतार सिंह तंवर ने भी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए। पटेल नगर से पूर्व विधायक वीणा आनंद, छतरपुर से पार्षद उमेश सिंह फोगाट हिमाचल प्रदेश के आप प्रभारी रतनेश गुप्ता और सह प्रभारी सचिन राय भी भाजपा में शामिल हुए।

बाराबंकी में सरयू उफान पर, दर्जनों गांव जलमग्न

बाराबंकी (ईएमएस)। लगातार हो रही बारिश और नेपाल से छोड़े गए पानी के चलते बाराबंकी जिले में सरयू नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है जिससे दर्जनों गांव जलमग्न हो गए हैं।

मूसलाधार बारिश और नेपाल से छोड़े गए पानी के चलते सरयू नदी खतरे के निशान से लगभग 52 सेंटीमीटर ऊपर बह रही है, इसकी चपेट में सैकड़ो गांव प्रभावित हो रहे हैं। वहीं दर्जनों गांव में बाढ़ का पानी लोगों के घरों में घुसने लगा है। जिले की तीन तहसीलों में हाहाकार मचा हुआ है और हजारों बीघा फसल नष्ट हो चुकी है। मवेशी के चारे पानी की समस्या हो गई है। बाढ़ प्रभावित गांव से लोग अपने मवेशियों को साथ सुरक्षित स्थानों पर जाने लगे हैं।

नेपाल के गिरजा व शारदा बैराज से लगभग चार लाख 30 हजार पानी छोड़ने से एल्गिन ब्रिज पर नदी खतरे की निशान से लगभग 52 सेंटीमीटर ऊपर हो गई है। रामनगर तहसील के ग्राम हेतमपुर सुंदर नगर पर्वतपुर गायघाट जमका गुजरी अकोला आदि गांव पानी से गिर गए हैं।

उदयपुर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शहरों में दूसरे व एशिया में पहली पायदान पर

जयपुर (ईएमएस)। ट्रेवल प्लस लीजर एजेंसी ने अमेरिका में वर्ल्ड बेस्ट अवार्ड घोषित किए। राजस्थान के उदयपुर को पूरी दुनिया में सबसे सर्वश्रेष्ठ शहरों की रैंकिंग में दूसरा स्थान, वहीं एशिया में उदयपुर नंबर वन रैंकिंग पर है। ट्रेवल प्लस लीजर रीडर्स अवार्ड के तहत दुनिया भर दस सर्वश्रेष्ठ शहरों की लिस्ट जारी की गई इसमें मैक्सिको के शहर सैन मिगुएल डी ऑलेंडे को पहला स्थान, उदयपुर को दूसरा स्थान व तीसेर स्थान पर जापान का क्योटो शहर है।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने उदयपुर को वर्ल्ड रैंकिंग में दूसरा स्थान व एशिया में पहला स्थान मिलने पर प्रसन्नता जाहिर कर कहा कि उदयपुर को दुनिया के सबसे खूबसूरत व सर्वश्रेष्ठ शहरों में स्थान मिलना शहर की विरासत, कला-संस्कृति, खान-पान और स्थानीय लोगों का सम्मान हैं, जिन्होंने दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की नीतियों व पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सभी स्टेकहोल्डर्स की सामूहिक प्रयासों का परिणाम है कि राजस्थान दुनिया के सबसे पंसदीदा व बेस्ट पर्यटन स्थलों में शुमार है और यहां आने वाले पर्यटक सुखद यादें संजोकर अपने देश को लौटते हैं। वहीं प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ ने कहा कि उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के नेतृत्व में राजस्थान पर्यटन सफलता के नए आयाम गढ़ रहा है, इस साल की शुरूआत में ही प्रदेश में देशी व विदेशी पर्यटकों की आवक में काफी बढ़ी है, जो इस बात का संकेत है कि राजस्थान पर्यटकों के लिए सबसे पसंदीदा राज्य है।

पर्यटन विभाग की निदेशक डॉ. रश्मि शर्मा ने कहा कि प्रदेश पर्यटन विभाग पर्यटन स्थलों पर पर्यटकीय सुविधाओं को वैश्विक मानकों के अनुसार विकसित कर रहा है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के कुशल नेतृत्व व प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ के दिशा-निर्देशन में राजस्थान पर्यटन रेकॉर्ड उपलब्धियां हासिल करेगा।

दुनिया के दस सर्वश्रेष्ठ शहर:-

1. सैन मिगुएल डी ऑलेंडे, मेक्सिको
2. उदयपुर, भारत
3. क्योटो, जापान
4. होई एन, वियतनाम
5. चियांग माई, थाईलैंड
6. फ्लोरेंस, इटली
7. बैंकॉक, थाईलैंड
8. टोक्यो, जापान
9. उबुद, इंडोनेशिया
10. फुंचाल, पुर्तगाल

शहीद की विधवा पर अपमानजनक टिप्पणी, कार्रवाई की मांग

नई दिल्ली (ईएमएस)। कीर्ति चक्र विजेता कैप्टन अंशुमान सिंह की विधवा पर अपमानजनक टिप्पणी के मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग ने संज्ञान लिया है और दिल्ली पुलिस को पत्र लिखकर उस व्यक्ति के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग की है।

यह टिप्पणी राष्ट्रपति भवन में स्मृति सिंह की उस तस्वीर पर की गई है जिसमें वे अपने पति का मरणोपरांत कीर्ति चक्र सम्मान ग्रहण कर रही हैं। कैप्टन अंशुमान सिंह सियाचिन ग्लेशियर में भारतीय सेना के शिविर में अपने सहयोगियों को बचाने की कोशिश करते हुए शहीद हो गए थे।

सोशल मीडिया पर जहां कई यूजर्स ने शहीद सैन्यकर्मी को भावनात्मक श्रद्धांजलि दी, वहीं एक उपयोगकर्ता ने अपमानजनक टिप्पणी की। राष्ट्रीय महिला आयोग ने दिल्ली के पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा को लिखे गए पत्र में इस टिप्पणी को अश्लील बताया है।

आयोग ने यह भी कहा है कि दिल्ली निवासी अहमद के नाम के व्यक्ति ने यह टिप्पणी की। इसमें भारतीय न्याय संहिता- 2023 की धारा 79 और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 67 का उल्लंघन किया गया है। महिला आयोग ने एक्स पर पोस्ट में कहा- एनसीडब्ल्यू इस व्यवहार की निंदा करता है और तत्काल पुलिस कार्रवाई का आग्रह करता है।

ईडी की याचिका पर सुनवाई 15 तक टली

नई दिल्ली (ईएमएस)।दिल्ली उच्च न्यायालय ने कथित शराब घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जमानत के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की याचिका को 15 जुलाई को सुनवाई के लिए सूचिबद्ध किया है। उच्च न्यायालय ने पहले निचली अदालत के 20 जून के आदेश पर रोक लगा दी थी, जिसके तहत केजरीवाल को मामले में जमानत दी गई थी। न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा, जिन्हें याचिका पर सुनवाई करनी थी, उन्हें ईडी के वकील ने सूचित किया कि जांच एजेंसी को उसकी अर्जी पर केजरीवाल के जवाब की प्रति मंगलवार देर रात 11 बजे ही मिली और ईडी को प्रत्युत्तर दाखिल करने के लिए कुछ समय की जरूरत है।

पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा

सीबीआई जांच के लिए राज्य सरकार की सहमति जरूरी

-पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका को सही कहा, 13 अगस्त को अगली सुनवाई

नई दिल्ली (ईएमएस)।पश्चिम बंगाल में सीबीआई जांच के खिलाफ ममता सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में 1 मई को याचिका लगाई थी। कोर्ट ने 8 मई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। कोर्ट ने बुधवार को याचिका को सुनवाई योग्य माना। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने केंद्र सरकार की उस दलील को खारिज कर दिया कि, यह अर्जी सुनवाई योग्य नहीं है। कोर्ट ने कहा कि बंगाल सरकार ने कानूनी पहलू उठाया है जिस पर विचार किया जाना चाहिए। कोर्ट इस मामले पर 13 अगस्त को अगली सुनवाई करेगा। इसके साथ ही बेंच ने कहा कि, जब राज्य सरकार ने सीबीआई जांच के लिए दी गई अपनी परमीशन को वापस ले लिया तो फिर एजेंसी वहां के मामलों में केस क्यों दर्ज कर रही है।

बंगाल सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में संविधान के आर्टिकल 131 का हवाला देते हुए याचिका दाखिल की है। इसमें सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र का जिक्र है। इसके मुताबिक केंद्र और राज्यों के बीच के मामलों की सुनवाई सिर्फ सुप्रीम कोर्ट में की जाती है।

केंद्र और बंगाल के बीच शुरु हुआ विवाद

पश्चिम बंगाल और केंद्र के बीच ताजा विवाद संदेशखाली केस के बाद शुरु हुआ। ईडी ने 5 जनवरी को बंगाल के संदेशखाली में टीएमसी नेता शेख शाहजहां के घर छापा मारा था। इस दौरान अधिकारियों पर पर टीएमसी समर्थकों ने जानलेवा हमला किया था। इसमें तीन अधिकारी घायल हो गए थे। बाद में सामने आया कि शाहजहां ने कई महिलाओं से यौन उत्पीड़न किया है। केंद्र ने सीबीआई जांच की सिफारिश की, चूंकि राज्य सरकार की परमीशन नहीं थी। इसलिए जांच एजेंसी ने हाईकोर्ट से इजाजत ली। कलकत्ता हाईकोर्ट ने 10 अप्रैल को संदेशखाली केस सीबीआई को सौंपा। हाईकोर्ट के आदेश के बाद सीबीआई ने महिलाओं के यौन शोषण मामले में एफआईआर दर्ज की।

जन हितैषी

राजनेताओं के लिए पाखंडी बाबाओं का सच

राजनीति में राजनेताओं के लिए पाखंडी बाबा मजबूरी बन चुके हैं। राजनेताओं के नाम से भीड़ इकट्ठी नहीं होती है। राजनेता जो कहते हैं, उस पर आम जनता को विश्वास नहीं होता है। जिसके कारण पिछले तीन-चार दशकों में भारतीय जन समुदाय को नेताओं पर विश्वास नहीं रहा। फिल्म स्टार, पाखंडी बाबाओं, खिलाड़ी और करतब दिखाने वालों के पास भीड़ बड़ी संख्या में एकत्रित होती है। राम मंदिर आंदोलन के बाद हिंदुओं की बड़ी भीड़ साधु-संतों के आसपास एकत्रित होने लगी। जिसके कारण राजनेताओं ने भी इन फर्जी बाबाओं का सहारा लेना शुरू कर दिया। जब बड़े-बड़े राजनेता ऐसे पाखंडी बाबाओं के दरबार में जाकर हाजिरी लगाते हैं, उनके पैर पड़ते हैं। पाखंडी बाबाओं के सामने नतमस्तक हो जाते हैं। आम जनता के बीच में यही संदेश जाता है। बाबाजी में कुछ ना कुछ तो ऐसा है, तभी तो समाज और राजनीति के इतने बड़े-बड़े लोग उनके दर्शन करने पहुंच रहे हैं।

1990 के बाद से भारत की राजनीति में पाखंडी बाबाओं का रसूख बढ़ता चला गया। उसके बाद ही पाखंडी बाबाओं का भाग्य उदय हुआ। उनके बड़े-बड़े आश्रम बनने लगे। करोड़ों रुपए के उनके आश्रम तैयार होने लगे। बाबाओं के कहने पर उनके भक्त वोट भी देने लगे। जिसके कारण भारत की संपूर्ण राजनीति धर्म और पाखंडी बाबाओं के आस-पास से संचालित हो रही है। हाल ही में 123 लोग हाथरस में बाबा नारायण हरि साकार उर्फ भोले बाबा के सत्संग में मौत के शिकार हो गए। उत्तर प्रदेश की सरकार और वहां की पुलिस ने बाबा का नाम एफ़आईआर में नहीं आने दिया। उनके आश्रम के आयोजन के खिलाफ हरदोई में मुकदमा दर्ज कर लिया गया। 2 दिन के अंदर जांच हो गईं, 900 पन्ने की रिपोर्ट आ गई। जिसमें बाबा को बरी कर दिया गया। 123 लोगों की मौत के बाद से बाबा फरार है। सरकार ने एसडीएम, थाना इंचार्ज और अन्य लोगों को निलंबित कर बाबा को बचाने की पुरजोर कोशिश की है। उत्तर प्रदेश की सरकार बाबा को क्यों बचना चाहती है। इसका सीधा-साधा जवाब है। बाबा के लाखों श्रद्धालु, अंधभक्त बाबा के एक इशारे पर राजनीतिक दल और राजनेता के पक्ष में मतदान करने समर्पित होते हैं। यह बात नेताजी जानते हैं। बाबा भी जानते हैं। राजनीति मैं अब सच का स्थान नहीं रहा। आम आदमी सपने में जीना चाहता है। फर्जी बाबा, बैरागी ईश्वर आराध्य के रूप में भक्तों को भरोसा दिलाते हैं। ईश्वर के आशीर्वाद से भक्तों के सारे कष्ट दूर हो जाएंगे। जब इन बाबाओं के पास बड़े-बड़े राजनेता, बड़े-बड़े अधिकारी और पुलिस वाले नतमस्तक होते हैं। ऐसी स्थिति में भक्तों का विश्वास इन बाबाओं के प्रति और भी बढ़ जाता है। फर्जी बाबा अपने आश्रम में बड़े-बड़े नेताओं और अधिकारियों के फोटो लगाते हैं। वहीं राजनेता फर्जी बाबाओं के पास पहुंचकर बाबा के भक्तों को विश्वास दिलाता है। वह भी उनके गुरु भाई हैं। उनके बीच में ईश्वरीय रिश्ता बना हुआ है। जिसका लाभ नेताओं को राजनीति में मिलता है। इस स्थिति में किसकी हिम्मत है, जो किसी भी राजनेता के खिलाफ एक शब्द भी बोल सके। उनके खिलाफ कोई कार्रवाई कर सके।

उत्तर प्रदेश सरकार पहले दिन से ही बाबा के प्रति उदार है। अपराध-न्याय प्रक्रिया में एक नया शब्द आयोजक जुड़ गया है। इसलिए आयोजकों के खिलाफ मुकदमा और कार्रवाई की जा रही है। भोले बाबा तो भक्तों की नजर में ईश्वर के अंश हैं। भगदड में जिनकी मृत्यु हुई है, भगवान ने उनकी उतनी ही उम्र लिखी थी। भगवान की लिखी हुई उम्र को भोले बाबा भी घटा और बढ़ा नहीं सकते हैं। जो मरे हैं, उनका मरना तय था। सत्संग में जो मरे हैं। निश्चित रूप से स्वर्ग में स्थान मिलेगा। बाबा के भक्तों का यह विश्वास आज भी है। राजनीति में सत्ता पक्ष हो, या विपक्ष हो। भक्तों के इस विश्वास को तोड़ना नहीं चाहते हैं। ना ही बाबा की नाराजी लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में बाबाओं का जो पाखंड चल रहा है। वह आगे भी चलता रहेगा। भोले बाबा हैंड पंप के पानी से लोगों की बीमारी को ठीक करेंगे। उनके चरण रज को माथे पर लगाने से सभी दुख-दर्द दूर हो जाएंगे। परिवार में सुख-शांति और सहमति आ जाएगी। भक्तों की यह शक्ति पाखंडी बाबाओं को देवता बनाकर उनके भोग-विलास के लिए सारे भक्त जिम्मेदार हैं। जो इन बाबाओ को विशिष्ट बनाते हैं। वहीं राजनेता अपने चुनावी लाभ और राजनीति को चमकाने के लिए इन बाबाओ के सामने नतमस्तक होते हैं, इसके सिवा उनके पास कोई चारा भी नहीं है। हाथरस की घटना से यही साबित होता है। नारायण साकार हरि उर्फ भोले बाबा के पाप का घड़ा अभी भरा नहीं है। सो वह जेल जाने से बच गए हैं। जेल जाने के बाद भी बाबा राम रहीम की तरह सरकार की कृपा उनके ऊपर बनी रहेगी। यही बाबाओं का पुण्य है। इसे सभी को समझना होगा। कलयुग का यही सत्य है। तुलसीदास और वाल्मीकि रामायण में कलयुग का जो वर्णन है। उसके अनुसार पाखंडी बाबा अपने पुण्य का उपभोग कर रहे हैं। इसमें बाबा योगी आदित्यनाथ भी क्या कर सकते हैं।

जनसंख्या नियंत्रण के लिये क्रांति का शंखनाद हो

प्रतिवर्ष विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाया जाता है, यह दिवस 11 जुलाई, 1987 से मनाया जाता है, जब दुनिया की आबादी 5 अरब हो गयी थी। यह दिवस जनसंख्या वृद्धि, इसके विकास एवं स्थिरता पर प्रभाव के जटिल मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समूची दुनिया को एकजुट करता है और आयोजनात्मकता से आगे बढ़कर वैश्विक जनसंख्या वृद्धि की चुनौतियों और अवसरों पर वैश्विक संवाद और कार्रवाई को उत्प्रेरित करता है। यह सतत और संतुलित भविष्य प्राप्त करने एवं शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण के वैश्विक प्रयासों में योगदान देता है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या आठ अरब 11 करोड़ 88 लाख के लगभग है जो वर्ष 2023 से 0.91 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। इसी अवधि में भारत की जनसंख्या एक अरब 44 करोड 17 लाख है जो वर्ष 2023 से 0.92 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। भारत जनसंख्या के हिसाब से चीन को पीछे छोड़ कर विश्व में पहले नंबर पर आ गया है। चीन की वर्तमान जनसंख्या 1 अरब 42 करोड़ 51 लाख है। जनसंख्या में वृद्धि संसाधनों और सेवाओं पर दबाब डालती है। जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ रही है, उस गति से आर्थिक विकास एवं अन्य विकास नहीं हो रहा है, जो एक गंभीर समस्या के रूप में बड़ी चुनौती है।

बात जब जनसंख्या वृद्धि की हो रही है तो दुनिया में भारत की बढ़ती जनसंख्या न केवल चौंका रही है, बल्कि एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आ रही है। भारत अब दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला मुल्क हो गया है, परेशानी में डालने वाली इस खबर के प्रति सचेत एवं सावधान होने के साथ सख्त जनसंख्या नियंत्रण नीति लागू करने की अपेक्षा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत साल 2023 में ही चीन से ज्यादा आबादी वाला देश हो गया था। जबकि पहले यह अनुमान लगाया जा रहा था कि साल 2027 में भारत दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाला देश होगा। बढ़ती जनसंख्या की चिन्ता में डूबे भारत के लिये चार साल पहले ही दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश होना कोई गर्व की बात नहीं है। भारत के लिये बढ़ती आबादी एवं सिकुड़ते संसाधन एक त्रासदी है, एक विडम्बना है, एक अभिशाप है। क्योंकि जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों की वृद्धि सीमित है। जनसंख्या वृद्धि ने कई चुनौतियों को जन्म दिया है किंतु इसके नियंत्रण के लिये कोरे कानूनी तरीके को एक उपयुक्त कदम नहीं माना जा सकता। इसके लिये सरकार को जनसंख्या पर तुरंत पारदर्शी एवं सख्त नियंत्रण के कदम उठाने के साथ, भारत के लिये प्रभावी जनसंख्या नीति को लागू करना, आम जनता की सोच एवं संस्कृति में बदलाव लाना होगा, लेकिन दुर्भाग्य से अभी कुछ हो ही नहीं रहा है।

पूरी दुनिया की आबादी में अकेले एशिया की 61 फीसदी हिस्सेदारी है। यह रिपोर्ट साफ इशारा करती है कि जहां कम आबादी है, वहां ज्यादा संपन्नता है। भारत में दिन-प्रतिदिन जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, इसी से बेरोजगारी बढ़ रही है, महंगाई भी बढ़ने का कारण यही है, संसाधनों की किल्लत भी इसी से बनी हुई है। यही एक कारण भारत को दुनिया की महाशक्ति बनाने की सबसे बड़ी बाधा है। ऐसे में सबको नौकरी मिलना इतना आसान नहीं। इसलिए सरकार शीघ्र सुसंगत जनसंख्या नीति लागू करे। जिसको दिक्कत हो और ज्यादा बच्चे पैदा करके मनमानी करनी हो, उनके खिलाफ कानूनी सजा के प्रावधान किये जाये। यह एक अराष्ट्रीय सोच है कि अधिक बच्चे पैदा करके उनकी जिंदगी कष्ट में झोंकना। जब बच्चे को सुखी जिंदगी नहीं दे सकते, तो दूसरों के भरोसे उन्हें पैदा करने की प्रवृत्ति शर्मनाक है। यह देखने में आ रहा है कि आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ समुदाय बच्चे पैदा करने को लेकर रूढ़िवादी नजरिया अपनाए हुए हैं और उनकी प्रतिक्रिया में अन्य समुदायों के नेता भी ज्यादा से ज्यादा बच्चो पैदा करने की वकालत करने लगे हैं। यह बेहद खतरनाक स्थिति है। इस तरह जनसंख्या बढ़ोतरी की पैरोकारी करने वालों की निंदा की जानी चाहिए, चाहे वे किसी मजहब के हों। क्योंकि देश की तरक्की की सबसे बड़ी बाधा बढ़ती जनसंख्या ही है।

भारत में बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में राजनीति एवं तथाकथित स्वार्थी राजनीतिक सोच बड़ी बाधा है। अधिकांश कट्टरवादी मुस्लिम समाज लोकतांत्रिक चुनावी व्यवस्था का अनुचित लाभ लेने के लिए अपने संख्या बल को बढ़ाने के लिये सर्वाधिक इच्छुक रहते हैं और इसके लिये कुछ राजनीतिक दल उन्हें प्रेरित भी करते हैं। ऐसे दलों ने ही उद्घोष दिया है कि ''जिसकी जितनी संख्या भारी सियासत में उसकी उतनी हिस्सेदारी।'' जनसंख्या के सरकारी आकड़ों से भी यह स्पष्ट होता रहा हैं कि हमारे देश में इस्लाम सबसे अधिक गति से बढ़ने वाला संप्रदाय-धर्म बना हुआ हैं। इसलिए यह अत्यधिक चिंता का विषय है कि ये कट्टरपंथी अपनी जनसंख्या को बढ़ा कर देश के लिये बड़ी समस्या खड़ी कर रहे हैं। सीमावर्ती प्रांतों जैसे पश्चिम बंगाल, आसाम, कश्मीर आदि में वाकायदा पडौसी देशों से मुस्लिमों की घुसपैठ कराई जाती है और उन्हें देश का नागरिक बना दिया जाता है, यह एक तरह का ''जनसंख्या जिहाद'' है क्योंकि इसके पीछे इनका छिपा हुआ मुख्य ध्येय हैं कि धर्मनिरपेक्ष भारत का इस्लामीकरण किया जाये।

हमारी जनसंख्या नियंत्रण संबंधी नीतियां बहुत उदार रही हैं, जिसकी वजह से हम आबादी बढ़ने की रफ्तार को जरूरत के हिसाब से थाम नहीं पाए। चीन ने साल 1979 में ही एक संतान नीति को पूरी कड़ाई से लागू कर दिया था, इसका नतीजा हुआ कि उसे आबादी की रफ्तार रोकने में कामयाबी मिली। ध्यान देने की जरूरत है कि साल 1800 में भारत की जनसंख्या लगभग 16.90 करोड़ थी। चीन आबादी के मामले में कभी भारत से लगभग दोगुना था। 1950 के बाद दोनों देशों की आबादी तेजी से बढ़ने लगी। साल 1980 में चीन एक अरब जनसंख्या तक पहुंच गया। इसके ठीक एक वर्ष पहले वहां एक संतान की नीति लागू हुई थी। भारत साल 2000 में एक अरब के आंकडे के पार पहुंचा और अब चीन से आगे निकल गया है। चीन एक संतान की नीति को 2016 में वापस ले चुका है, लेकिन इसके बावजूद वहां आबादी पर नियंत्रण है, क्योंकि वहां की राष्ट्रीय भावना, संस्कृति और सोच, दोनों में बदलाव आ चुका है। लेकिन भारत में ऐसा न होने का कारण राजनीति एवं उसके द्वारा पोषित मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति है। इसके वितरीत विभिन्न मुस्लिम देश टर्की, अल्जीरिया, टयूनीशिया, मिस्त्र, सीरिया, ईरान, यू.ऐ. ई., सऊदी अरब व बांग्लादेश आदि ने भी कुरान, हदीस, शरीयत आदि के कठोर रुढ़ीवादी नियमों के उपरांत भी अपने-अपने देशों में जनसंख्या वृद्धि दर नियंत्रित करने के कठोर उपक्रम किये हैं।

भारत की स्थिति चीन से पृथक है तथा चीन के विपरीत भारत एक लोकतांत्रिक देश है जहाँ हर किसी को अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में निर्णय लेने का अधिकार है। भारत में कानून का सहारा लेने के बजाय जागरूकता अभियान, शिक्षा के स्तर को बढ़ाकर तथा गरीबी को समाप्त करने जैसे उपाय करके जनसंख्या नियंत्रण के लिये प्रयास होने चाहिये। परिवार नियोजन से जुड़े परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये तथा ऐसे परिवार जिन्होंने परिवार नियोजन को नहीं अपनाया है उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार नियोजन हेतु प्रेरित करना चाहिये। बेहतर तो यह होगा कि शादी की उम्र बढ़ाई जाए, स्त्री-शिक्षा को अधिक आकर्षक बनाया जाए, परिवार-नियंत्रण के साधनों को मुफ्त में वितरित किया जाए, संयम को महिमा-मंडित किया जाए और छोटे परिवारों के लाभों को प्रचारित किया जाए। शारीरिक और बौद्धिक श्रम के फासलों को कम किया जाए। जनसंख्या दिवस पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बिल्कुल सही कहा है कि जनसंख्या स्थिरीकरण के प्रयासों से सभी मत, मजहब, वर्ग को समान रूप से जोड़ा जाना चाहिए। अनियंत्रित जनसंख्या भी अघोषित आतंकवाद एवं जिहादी मानसिकता ही है, यह राष्ट्र की प्रगति एवं संसाधनों को जड़ करने एवं बांधने का जरिया है। क्योंकि लोगों के आवास के लिए कृषि योग्य भूमि और जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। यदि जनसंख्या विस्फोट यूं ही होता रहा तो लोगों के समक्ष रोटी, कपड़ा, मकान और पर्यावरण की विकराल स्थिति उग्रत्तर होती जायेगी। इससे बचने का एक मात्र उपाय यही है की हम येन केन प्रकारेण बढ़ती आबादी को रोकें। इसके लिये चीन के द्वारा अपनायी गयी जनसंख्या नियंत्रण नीति पर भी ध्यान देना चाहिए। अन्यथा विकास का स्थान विनाश को लेते अधिक देर नहीं लगेगी।

(लेखक- ललित गर्ग/ईएमएस)

एक बार फिर दिखी रुस और भारत की पक्की दोस्ती, 9 समझौते बने गवाह

मॉस्को(ईएमएस)। भारत और रुस के बीच 9 समझौतें हुए हैं। ये सिर्फ समझौते नहीं हैं बल्कि दोनों देशों की दोस्ती के पक्के गवाह हैं। दोनों देशों ने आपसी व्यापार को साल 2030 तक 100 अरब डॉलर से अधिक पहुंचाने का लक्ष्य रखा। अमेरिकी ऐतराज के बावजूद दुनिया ने पीएम मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की मजबूत दोस्ती देखी। पीएम मोदी ने पुतिन से चर्चा के दौरान कहा कि हम दोनों देश पिछले 21 साल से ऐसे ही मिल रहे हैं लेकिन, इस बार पूरी दुनिया इस मुलाकात के अलग-अलग अर्थ निकाल रही है। पीएम मोदी ने यूक्रेन मसले पर शांति की सलाह भी दी, जिसे पुतिन ने गंभीरता से लिया। पीएम नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय हाई प्रोफाइल रूस यात्रा नौ समझोतों के साथ पूरी हुई। जिसमें व्यापार, राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके व्यापार निपटान, उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे जैसे नए मार्गों के जरिए माल परिवहन कारोबार में वृद्धि शामिल हैं।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच मॉस्को में 22वीं वार्षिक द्विपक्षीय शिखर बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान में दोनों पक्षों ने विशेष और विशेषाधिकार-प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई। भारत और रूस ने आपसी व्यापार को 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक पहुंचाने पर सहमति जताई। यह लक्ष्य निवेश को बढ़ावा देकर, आपसी व्यापार के लिए राष्ट्रीय मुद्राओं के उपयोग और ऊर्जा से लेकर कृषि एवं बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाकर हासिल किया जाएगा। दोनों पक्षों ने रूस-भारत व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देकर द्विपक्षीय बातचीत को अतिरिक्त प्रोत्साहन देने की बात भी कही। जब पीएम मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन आपस में मीटिंग कर रहे थे तो अमेरिका समेत तमाम पश्चिम देश टेढ़ी आंखों से नजरें गढ़ाए हुए थे। पहले अमेरिका और फिर यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की का ऐतराज सामने आया। अमेरिका ने चेतावनी दी कि अगर कोई देश रूस से मिलता है तो उसे यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना होगा। वहीं, जेंलेस्की मोदी और पुतिन की गर्मजोशी मुलाकात पर भड़के हुए नजर आए। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश के प्रमुख का हत्यारे को गले लगाना उसे चोट पहुंचाता है। दोनों देशों ने सहयोग के नौ प्रमुख क्षेत्रों पर सहमति व्यक्त की। इनमें व्यापार, राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके व्यापार निपटान, उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे जैसे नए मार्गों के जरिए माल परिवहन कारोबार में वृद्धि शामिल हैं। सहयोग के अन्य क्षेत्रों में कृषि उत्पादों, खाद्य और उर्वरक व्यापार में वृद्धि, परमाणु ऊर्जा सहित ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना, बुनियादी ढांचे के विकास के लिए बातचीत को मजबूत करना, डिजिटल अर्थव्यवस्था में निवेश और संयुक्त परियोजनाओं को बढ़ावा देना, दवाओं की आपूर्ति में सहयोग और मानवीय सहयोग को प्रोत्साहन शामिल है।

2030 तक 100 अरब डॉलर का लक्ष्य

दोनों नेताओं ने भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार से संबंधित गैर-शुल्क व्यापार बाधाओं को खत्म करने और ईएईयू-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र की स्थापना की संभावना सहित द्विपक्षीय व्यापार के उदारीकरण के लिए बातचीत जारी रखने पर सहमति जताई। दोनों देशों की इस पहल का मकसद वर्ष 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक के आपसी व्यापार का लक्ष्य हासिल करना है। इसमें संतुलित द्विपक्षीय व्यापार के लिए भारत से वस्तुओं की आपूर्ति में वृद्धि शामिल है। इसके साथ ही निवेश गतिविधियों को फिर से सक्रिय करने पर सहमति जताई गई। संयुक्त बयान में भारत और रूस ने राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके द्विपक्षीय निपटान प्रणाली के विकास पर सहमति जताई। इसका मतलब है कि भारत रूस से कच्चे तेल जैसी किसी भी खरीद का भुगतान संभावित रूप से भारतीय रुपये में करेगा। इसके बदले में रूस भारतीय मुद्रा का उपयोग भारत से आयात के भुगतान के लिए कर सकता है। इसी तरह रूसी मुद्रा रूबल का उपयोग भी संभव है। दोनों नेताओं ने उत्तर-दक्षिण अंतरराष्ट्रीय परिवहन गलियारे, उत्तरी समुद्री मार्ग और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री रेखा के नए मार्गों की शुरुआत करने पर भी सहमति जताई। बयान के मुताबिक माल की बाधा-मुक्त आवाजाही के लिए डिजिटल प्रणालियों के इस्तेमाल से सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने पर भी सहमति व्यक्त की गई।

कृषि, परमाणु ऊर्जा पेट्रोकेमिकल्स में सहयोग

दोनों देश कृषि उत्पादों, खाद्य और उर्वरकों में द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा बढ़ाने के साथ ही पशु चिकित्सा, स्वच्छता और कृषि उत्पादों में कीटनाशकों की मौजूदगी से जुड़ी पाबंदियों को हटाने के लिए बातचीत करने पर भी सहमत हुए। बयान में कहा गया, समझौते के तहत परमाणु ऊर्जा, तेल शोधन और पेट्रोकेमिकल्स सहित प्रमुख ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने और ऊर्जा बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकियों और उपकरणों के क्षेत्र में साझेदारी बढ़ाने की बात भी शामिल है। दोनों पक्षों ने बुनियादी ढांचे के विकास, परिवहन इंजीनियरिंग, वाहन उत्पादन और जहाज निर्माण, अंतरिक्ष और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में बातचीत को आगे बढ़ाने पर भी सहमति जताई। इसके अलावा सहायक कंपनियों और औद्योगिक समूहों के गठन से एक-दूसरे के बाजारों में भारतीय और रूसी कंपनियों के प्रवेश को आसान बनाने पर भी सहमति बनी।

बम, बंदूकों तथा गोलियों के बीच शांति नहीं होती

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक स्पष्ट संदेश देते हुए रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से कहा कि यूक्रेन संघर्ष का समाधान युद्धक्षेत्र में संभव नहीं है और बम, बंदूकों तथा गोलियों के बीच शांति वार्ता सफल नहीं होती। रूसी राष्ट्रपति कार्यालय 'क्रेमलिन' में पुतिन के साथ शिखरवार्ता से पहले, अपने प्रारंभिक वक्तव्य में मोदी ने जाहिर तौर पर यूक्रेन में बच्चों के एक अस्पताल पर बम हमले का जिक्र करते हुए कहा कि बेगुनाह बच्चों की मौत हृदय-विदारक और बहुत पीड़ादायी है। एक दिन पहले ही कीव में बच्चों के एक अस्पताल पर एक संदिग्ध रूसी मिसाइल से हमला किया गया, जिस पर वैश्विक स्तर पर नाराजगी जताई गई है। पीएम मोदी की इस सलाह को पुतिन ने भी गंभीरता से लिया और यूक्रेन संकट को हल करने में भारत के योगदान की सराहना की। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रूस दौरे पर संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत से मास्को को स्पष्ट संदेश दिया। उसने कहा कि यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के किसी भी समाधान को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों का पालन करना होगा। पीएम मोदी की मॉस्को यात्रा के संबंध में सवालों का जवाब देते हुए अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि भारत एक रणनीतिक साझेदार है जिसके साथ अमेरिका खुली और ईमानदार बातचीत करता है, जिसमें रूस के साथ भारत के संबंधों के बारे में चिंताएं भी शामिल हैं। उन्होंने कहा, हम भारत से आग्रह करेंगे, जैसा कि हम किसी भी देश से अपेक्षा करते हैं कि जब वह रूस से मिलता है, तो यह स्पष्ट हो कि यूक्रेन में संघर्ष का कोई भी समाधान संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सम्मान करता हो और यह यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता, यूक्रेन की संप्रभुता का सम्मान करे।

सफ़ेद चूने की पुताई से घर रखे ठंडा

गर्मियाँ अपने चरम पर हैं और हम सभी चाहते हैं कि हमारे घर बहुत ठंडे रहें।सफ़ेद पेंट आम तौर पर 80 से 90 प्रतिशत सूर्य की रोशनी को परावर्तित करते हैं। इसका मतलब है कि वे अभी भी 10 से 20 प्रतिशत गर्मी को अवशोषित करते हैं, आइए जानते हैं कि हमें गर्मी क्यों लगती है। अब देखते हैं कि हमें गर्मी क्यों लगती है। सबसे पहले हमें यह समझने की ज़रूरत है कि ज़्यादातर इमारतें कंक्रीट से बनी होती हैं और इमारतें छत से गर्म होना शुरू होती हैं। छत सूरज की गर्मी को सोख लेती है और फिर इसे अगली मंज़िल पर भेजती है। फर्श की हवा गर्म होकर स्लैब में चली जाती है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक हवा ज़मीन पर नहीं चली जाती (जो एक इन्सुलेटर के रूप में कार्य करती है)। यही कारण है कि इमारत का भूतल तापमान ऊपर की मंज़िल से कम होता है क्योंकि स्थानांतरण के दौरान बहुत अधिक गर्मी खो जाती है। दीवारें वातावरण से गर्मी सोख लेती हैं और गर्मी को बढ़ाती हैं। यह तब और भी बदतर हो जाता है जब उचित वेंटिलेशन के बिना गर्म हवा कमरे में फंस जाती है। कमरे का आंतरिक तापमान सूरज की रोशनी से गर्मी के अवशोषण और विकिरण के माध्यम से गर्म हो जाता है। अपने घर को ठंडा और तरोताज़ा रखने के लिए यहाँ कुछ सुझाव हैंः 1. घरों में हाई ग्लॉस पेंट का इस्तेमाल करें। हाई ग्लॉस पेंट का एक बड़ा फायदा यह है कि यह टिकाऊ होता है, जिसका मतलब है कि अगर आपकी दीवार लगातार गंदे फिंगरप्रिंट या तेल या चिकनाई वाली चीज़ों के संपर्क में रहती है, तो भी आप बिना किसी चिंता के उन्हें आसानी से धो सकते हैं। हाई ग्लॉस पेंट अन्य पेंट की तुलना में नमी के प्रतिरोधी होते हैं। यह चमकदार और बोल्ड दिखता है और घर ज़्यादा विशाल दिखता है। यह अन्य पेंट की तुलना में ज़्यादा रोशनी को परावर्तित करता है, जैसे कि एक दर्पण, और रंग को ज़्यादा चमकदार और सुंदर बनाता है। जिन पेंट की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है, उनमें पानी के धब्बे दिखने की संभावना होती है और वे गीले होने पर फीके पड़ जाते हैं या उनका रंग फीका पड़ जाता है। छत पर सफ़ेद चूना-चूने का उपयोग छत पर परावर्तक सतह के रूप में किया जा सकता है। हमारे पास कुछ उदाहरण हैं जहाँ चूने की सफ़ेदी का महत्व है, जैसे आयरलैंड में, जहाँ घरों को पारंपरिक रूप से सफ़ेद किया जाता है। चूने की सफ़ेदी भी एक किफ़ायती उपाय है। चूने के पानी का पेस्ट जिसे पेविकोल चिपकने वाले पदार्थ के साथ मिलाया जाता है, एक साफ सफेद छत जो 80ज्ञ सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करती है, गर्मियों की दोपहर में लगभग 31ण ठंडी रहेगी। चूँकि चूना शुद्ध चूना होता है, इसलिए यह अपने दोहरे अपवर्तन के कारण असाधारण चमक देता है। लाइम वॉश और वाइट वॉश दोनों ही एक ही मटेरियल बन जाते हैं। हल्के रंग का उपयोग-दीवारों, साज-सज्जा और फर्नीचर में हल्के रंग का उपयोग घर को ठंडा और तरोताजा बनाने में भी मदद करता है। याद रखें, गहरे रंग का उपयोग करने से बचें क्योंकि यह प्रकाश को अवशोषित करता है, मुख्य रूप से सूर्य से विकिरण और हवा को गर्म करता है। साथ ही, हल्के रंगों का उपयोग कमरे को अधिक विशाल और उज्ज्वल बनाता है। खिड़की पर पौधे- आप अपनी खिड़की पर भी पौधे लगा सकते हैं। यह ह्यूमिडिफायर का काम करता है। ऐसा कहा जाता है कि पौधे सापेक्ष आर्द्रता को बढ़ा सकते हैं जो व्यक्ति को स्वस्थ बना सकता है। यह घर के अंदर की हवा की गुणवत्ता में भी सुधार करता है। यह तनाव मुक्त रहने में भी मदद करता है और इस प्रकार हमारे स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करता है। वे कुछ स्थितियों में शोर अवशोषक के रूप में भी काम करते हैं जो हमें श्रवण यंत्रों से दूर रहने में मदद कर सकते हैं। और अगर आप बैंगलोर (बैंगलोर, हैदराबाद, मुंबई, पुणे) में रहते हैं और अपने घर को रंगवाना चाहते हैं, तो आप हमेशा कलरड्राइव पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि यह आपको बेहतरीन सेवाएँ (इंटीरियर पेंट, एक्सटीरियर पेंट, टेक्सचर पेंट, स्टेंसिल पेंट, और बहुत कुछ) प्रदान करेगा। कलर ड्राइव मूल रूप से घर की पेंटिंग से संबंधित सेवाएँ प्रदान करता है और यदि आप अपने घर को वास्तव में ठंडा रखना चाहते हैं, तो मूल रूप से छत पर सफेद चूना धोना है और हाँ जाहिर है कि आप अपने घर के बाहरी हिस्से या अंदरूनी हिस्से को हल्के रंगों में रंगवा सकते हैं गर्म शहरी का तापमान बढ़ाने में डामर की सड़कें भी भूमिका निभाती हैं।

हाल ही में एरिज़ोना स्टेट युनिवर्सिटी और फीनिक्स शहर द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि डामर की सड़क पर भूरे रंग की परावर्तक पुताई करने से सड़क की सतह के औसत तापमान में 9 से 10 डिग्री सेल्सियस की कमी आती है, और सुबह के समय तापमान में औसतन 1 डिग्री सेल्सियस की गिरावट देखी गई।गर्मी के दिनों में सड़कें 82 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो जाती हैं। सड़कों द्वारा अवशोषित यह ऊष्मा रात में वापस वातावरण में फैल जाती है, फलस्वरूप रात का तापमान बढ़ जाता है। और रात गर्म होने से सुबहें भी गर्म होती है। इस तरह गर्मी का यह चक्र चलता ही रहता है।(लेखक -संजय गोस्वामी/ ईएमएस)

शब्द पहेली - 8064

बाएँ से दाएँ

1. नियंत्रण, घोड़े की रास-3
3. ध्वज, झंडा-3
5. माहिर, होशियार-2
6. बेल, लतिका-2
8. अस्वीकृत करना-4
11. अदृश्य-3
13. फटकार, धिक्कार-3
14. अधर, होठ-2
15. सलाह, सुझाव-2
16. आश्रय-3
18. अनुमान, अंदाज-3
20. आलता, माहुर-4
23. नासिका-2
25. रहस्य-2
26. रेखा, लाइनू-3
27. परिमूल्य-3

ऊपर से नीचे

1. लाख, सौ हजार-2
2. बारीक, सूक्ष्म-3
3. तीन घंटे का समय-3
4. समय, वक्त-2
5. कोतवाल-3
7. बल, जोर, दम-3
9. श्रवणेंद्रिय-2
10. जो लायक न हो-4
12. कृष्ण के बड़े भाई-4
16. दर्पण, शीशा-3
17. नौका -2
19. आसान, सरल-3
21. उपस्थित-3
22. रस से भरा-3
24. बीता हुआ दिन-2
25. रजनी, निशा-2

शब्द पहेली -8063 का हल

■	आ	र	ति	■	अ	ना	मि	का
आ	ना	■	ल	जी	ज	■	■	र
ले	■	श	मि	■	र	न	■	तू
ख	ल	ब	ला	ना	■	र	ई	स
■	ग	■	ना	■	म	■	मा	■
ख	न	न	■	म	नो	न	न	य
लि	■	ल	क	■	रं	ग	■	ती
हा	■	■	हा	फि	ज	■	का	म
न	स	वा	र	■	न	ज	ला	■

Jagrutidaur.com, Bangalore

खेल-समाचार

नागल जर्मनी में जारी एटीपी चैलेंजर के दूसरे दौर में पहुंचे

ब्रांश्विग (ईएमएस)। पेरिस ओलंपिक से ठीक पहले भारत के सुमित नागल जर्मनी में जारी ब्रांश्विग एटीपी चैलेंजर टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में पहुंच गये हैं। नागल ने ब्राजील के फेलिप मेलिगेनी आल्वेस को 6-1 6-4 से हराकर पुरुष एकल के दूसरे दौर में जगह बनायी। दूसरे वरीयता प्राप्त नागल ने आल्वेस को मुकाबले में कोई अवसर नहीं दिया। अब नागल का सामना प्री क्वार्टर फाइनल में अर्जेन्टीना के पेड्रो केचिन से होगा। यह टूर्नामेंट इसी माह के अंत में शुरु हो रहे पेरिस ओलंपिक की तैयारियों के लिए अहम माना जा रहा है। नागल विंबलडन के पहले दौर में ही सर्बिया के मियोमिर केसमानोविच से हार गये थे। ऐसे में अब ब्रांश्विग में मिली जीत से ओलंपिक के लिए उनका मनोबल बढ़ेगा। नागल ने इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलियाई ओपन के मुख्य ड्रॉ के लिए भी क्वालीफाई करने के लिए हुए मुकाबले में कजाखस्तान के एलेक्जेंडर बुब्लिक को हराया था। इसके अलावा उन्होंने इंडियन वेल्स मास्टर्स और मोंटे कार्लो मास्टर्स के मुख्य ड्रॉ के लिए भी क्वालीफाई किया था।

आईसीसी टी20 रैंकिंग में ऋतुराज और अभिषेक ने लगायी लंबी छलांग

दुबई (ईएमएस)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट बोर्ड (आईसीसी) की ताजा टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड 844 अंक के साथ ही शीर्ष पर कायम हैं जबकि भारत केसूर्यकुमार यादव 821 अंक लेकर दूसरे नंबर पर हैं। वहीं जिम्बाब्वे दौरे में शानदार प्रदर्शन के कारण भारतीय टीम के युवा बल्लेबाजों ऋतुराज गायकवाड़ और अभिषेक शर्मा को रैंकिंग में काफी लाभ हुआ है। ताजा बल्लेबाजी रैंकिंग में ऋतुराज गायकवाड़ 13 पायदान ऊपर आकर शीर्ष-10 में पहुंच गए हैं। उन्हें 662 रेटिंग अंकों के साथ सातवां स्थान मिला है। ऋतुराज ने जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में 77 रनों की आक्रामक पारी खेली थी जिसका लाभ उन्हें मिला है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ आक्रामक शतकीय पारी खेलने वाले अभिषेक शर्मा अब 75वें पायदान पर आ गए हैं। अभिषेक ने जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे टी20 में 47 गेंदों में ही शतक लगा दिया था। इन दोनो के अलावा भारत के ही रिंकू सिंह को भी चार स्थान लाभ हुआ है और वह 39वें स्थान पर पहुंच गए हैं। रिंकू ने दूसरे ही टी20 में 22 गेंदों में 48 रन बनाए थे। वहीं जिम्बाब्वे के ब्रायन बेनेट को भी अपने अच्छे प्रदर्शन का लाभ मिला है और वह 25 स्थान के लाभ के साथ ही 96वें स्थान पर पहुंच गये हैं।

गंभीर के लिए कोहली-रोहित से तालमेल बनाना आसान नहीं होगा

मुम्बई (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के नए मुख्य कोच बने गौतम गंभीर काफी आक्रामक रुख वाले खिलाड़ी रहे हैं। कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) का मेंटोर रहने के दौरान भी वे काफी आक्रामक रहे हैं। आईपीएल में तो ये सब चल गया क्योंकि वहां कई युवा खिलाड़ी होते हैं पर भारतीय टीम में कप्तान रोहित शर्मा और अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली पर हावी होना उनके लिए संभव नहीं होगा। भारतीय क्रिकेट में कप्तान के पास ही अधिकतर अधिकार रहा है। कप्तान सिर्फ अपनी पसंद की टीम नहीं चाहते, बल्कि कई बार कोच भी उनकी मर्जी का ही बनता है। यही कारण है कि क्रिकेट एडवाइजरी कमेटी की सिफारिश के बावजूद अनिल कुंबले कोच नहीं बन पाए थे क्योंकि उनके समय कप्तान रहे विराट कोहली ने रवि शास्त्री को कोच बनाने को कहा था। बाद में बीसीसीआई को कोहली की बात माननी पड़ी। .

गंभीर एकदिवसीय विश्वकप 2027 तक के लिए भारतीय टीम के कोच बने हैं। इसमें कोई शक नहीं कि वे अपनी कोई योजना लेकर आये होंगे। साल 2027 तक कप्तान रोहित शर्मा 40 साल के हो चुके होंगे। रोहित ने यह साफ नहीं किया है कि वे 2027 का वर्ल्ड कप खेलना चाहेंगे या नहीं। हो सकता है कि रोहित एक-डेढ़ साल बाद इस पर अपनी कोई राय बनाएं पर कोच के पास इतना समय नहीं है। उन्हें अपनी वैकल्पिक योजना तैयार रखनी होगी। उन्हें ये ध्यान रखना होगा कि कोच तभी सफल हो सकता है जब वह कप्तान के साथ मिलकर चले। उसपर अपने फैसले थोपने का प्रयास न करे।

मेसी के गोल से अर्जेंटीना कोपा अमेरिका कप के फाइनल में पहुंचा सबसे अधिक गोल करने वाले दूसरे खिलाड़ी बने

बार्सिलोना (ईएमएस)। स्टार फुटबॉलर लियोनन मेसी के गोल से अर्जेंटीना की टीम कोपा अमेरिका फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंच गयी है। अर्जेंटीना ने सेमीफाइनल में कनाडा को 2-0 से हराया। इस मैच में मेसी ने एक गोल किया। इससे अब उनके कुल 109 गोल हो गए हैं। अब फाइनल में अर्जेंटीना का मुकाबला उरुग्वे या कोलंबिया से होगा।

इस मैच में अर्जेंटीना की ओर से 22वें मिनट में पहला गोल जूलियन अल्वारेज़ ने किया। वहीं मैच का दूसरा गोल मेसी ने 51वें मिनट में एन्जो फर्नांडीज के शॉट से किया। इस प्रकार अर्जेंटीना की बढ़त 2-0 पहुंच गयी।

मेसी ने अर्जेंटीना के लिए अपने पिछले 25 मैचों में अबतक 28 गोल दागे हैं। उन्होंने कोपा अमेरिका में अब तक 14 गोल किये हैं जो विश्व रिकॉर्ड से तीन गोल ही कम हैं। अंतराष्ट्रीय फुटबॉल में मेसी से अधिक गोल केवल पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो के नाम है। रोनाल्डो ने अबतक 212 मैचों में 130 गोल दागे हैं। मेसी 109 गोल के साथ दूसरे नंबर पर हैं। वहीं ईरान के अल देई 108 गोल के साथ ही तीसरे नंबर पर हैं।

मेदवेदेव और अल्कारेज विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे

लंदन (ईएमएस)। रुस के दानिल मेदवेदेव और स्पेन के कार्लोस अल्कारेज अपने-अपने मुकाबले जीतने के साथ ही विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंच गये हैं। मेदवेदेव ने जहां पांच सेट तक चले क्वार्टर फाइनल में यानिक सिनर को 6-7, 6-4, 7-6, 2-6, 6-3 से हराया। वहीं अल्कारेज ने अमेरिका के टॉमी पॉल के खिलाफ जीत हासिल की। पहला सेट हारने के बाद डिफेंडिंग चैंपियन अल्कारेज ने क्वार्टर फाइनल में अमेरिकी खिलाड़ी टॉमी पॉल को 5-7, 6-4, 6-2, 6-2 से हराया।

वहीं महिला वर्ग के एक अन्य मुकाबले में क्रोएशिया की 28 वर्षीय खिलाड़ी डोना वेकिच ने तीन सेट तक चले क्वार्टर फाइनल में लुलु सन को हराकर पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनायी है। वहीं इससे पहले वेकिच ने न्यूजीलैंड की क्वालीफायर सन को 5-7, 6-4, 6-1 से हराया था। वह किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट में 43वीं बार भाग ले रही है। इस खिलाड़ी ने इससे पहले कभी अंतिम चार में जगह नहीं बनायी थी।

द्रविड़ ने अतिरिक्त बोनस लेने से इंकार किया, बाकि कोचिंग स्टाफ जितनी राशि ही लेंगे

मुम्बई (ईएमएस)। पूर्व क्रिकेटर और भारतीय टीम के मुख्य कोच रहे राहुल द्रविड़ सही मायनों में एक जेंटलमैन हैं। क्रिकेटर के अलावा मुख्य कोच के तौर पर भी वह अपने काम में पूरी तरह से समर्पित रहें हैं। अपनी सादगी और विनम्रता के लिए वह जाने जाते हैं। सफलता का श्रेय स्वयं न लेकर दूसरों को देना उनकी आदत रही है। अब मुख्य कोच पद छोड़ने के बाद भी उन्होंने अपने व्यवहार से यही बात साबित की है। द्रविड़ ने कोच पद छोड़ते ही अतिरिक्त बोनस लेने से मना कर दिया है।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने टी20 विश्वकप विजेता टीम को 125 करोड़ रुपए का इनाम दिया है। यह इनामी राशि खिलाड़ियों और कोचिंग स्टाफ के 42 सदस्यों के बीच बंटेगी। 125 करोड़ रुपए में से टीम के सभी 15 सदस्यों और कोच राहुल द्रविड़ को 5-5 करोड़ मिलने थे और कोचिंग स्टाफ के बाकी सदस्यों को 2.5-2.5 करोड़ रुपए मिलने थे। ऐसे में द्रविड़ ने अतिरिकत बोनस लेने से मना कर दिया है। द्रविड़ ने कहा है कि कोचिंग स्टाफ के बराबर ही इनामी राशि की उन्हें दी जाये।

एंडरसन के पास अंतिम टेस्ट में वार्न का रिकार्ड तोड़ने का अवसर

लॉडर्स (ईएमएस)। इंग्लैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन अपने करियर के अंतिम टेस्ट मैच में दिगंगत महान स्पिनर शेन वार्न का रिकार्ड तोड़ने के इरादे से उतरेंगे। 41 साल के एंडरसन अपने करियर का अंतिम टेस्ट खेल रहे हैं। ऐसे में उनके पास ऐतिहासिक लॉडर्स क्रिकेट स्टेडियम में एक नया रिकार्ड अपने नाम करने का अवसर है। वहीं टीम के कप्तान बेन स्टोक्स चाहते हैं कि एंडरसन सभी 20 विकेट लें। उन्होंने कहा कि ये मैच इस तेज गेंदबाज के लिए यादगार होना चाहिये। एंडरसन के पास इस मैच में वॉर्न को पछाड़कर टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बनने का अच्छा अवसर है।

राजस्थान में मिलेंगी चार लाख सरकारी नौकरियां, बजट में की घोषणा

जयपुर (ईएमएस)। राजस्थान की उपमुख्यमंत्री व वित्त मंत्री दिया कुमारी ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए सर्वजन हिताय आधारित समावेशी विकास के लक्ष्य वाला बजट बुधवार को विधानसभा में पेश किया। उन्होंने वित्त वर्ष के बजट अनुमानों में दो लाख 64 हजार 461 करोड़ 29 लाख रुपए की राजस्व प्राप्तियों का अनुमान लगाया गया है।

सरकार के सालाना बजट में अगले पांच साल में चार लाख सरकारी नौकरियां देने, 25 लाख घरों में नल से जल पहुंचाने, नौ नए (ग्रीनफील्ड) एक्सप्रेसवे बनाने तथा किसानों को 23,000 करोड़ रुपये के ब्याजमुक्त अल्पकालीन फसल ऋण देने की घोषणा की गई है।

मौजूदा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार का पहला पूर्ण बज पेश करते हुए वित्त मंत्री दीया कुमारी ने कहा कि हमने इस परिवर्तित बजट में अमृत कालखंड-'विकसित राजस्थान / 2047 के अन्तर्गत पांच साल की कार्ययोजना बनाकर 'सर्वजन हिताय आधारित समावेशी विकास का लक्ष्य रखा है। इस कार्ययोजना के अन्तर्गत भविष्य के लिए हमारे 10 संकल्प हैं। इन संकल्पों में राज्य को 350 अरब की अर्थव्यवस्था बनाना, पानी व बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का विकास तथा सम्मान सहित किसान परिवारों का आर्थिक सशक्तीकरण शामिल है।

सरकार के अब तक के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए दिया कुमारी ने कहा कि हमारी सरकार ने कार्यभार संभालते ही नीतिगत दस्तावेज-संकल्प पत्र के माध्यम से जनता से किये गये वादों को धरातल पर लाने का कार्य शुरू कर दिया है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं कि इस वित्त वर्ष के प्रारंभ से ही लोकसभा चुनावों की आचार संहिता लागू होने के बाद भी हमारे द्वारा अल्प अवधि में ही 53 प्रतिशत से अधिक बजट घोषणाओं तथा संकल्प पत्र के 45 बिंदुओं पर कार्यवाही पूरी की जा चुकी है।

उल्लेखनीय है कि दिया कुमारी ने लोकसभा चुनाव से पहले आठ फरवरी को लेखानुदान (अंतरिम बजट) पेश किया था। आज पेश बजट में मंत्री ने स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 27,660 करोड़ रुपये रखने का प्रस्ताव किया है। उन्होंने औद्योगिक नीति, युवा नीति, पर्यटन नीति, डेटा सेंटर नीति व खेल नीति सहित कई नई नीतियों की भी घोषणा की।

भर्तियों की घोषणा करते हुए दिया कुमारी ने कहा, ''हमारी सरकार युवाओं के सुरक्षित भविष्य के लिए संवेदनशील है। हमने लेखानुदान प्रस्तुत करते समय लगभग 70 हजार पदों पर भर्तियां किए जाने की घोषणा की थी। हमारे इस कार्यकाल में लगभग 20 हजार युवाओं को नियुक्ति प्रदान की गई। उन्होंने कहा, ''हमने पांच वर्षों में चार लाख भर्तियां करने का संकल्प लिया है और इस वर्ष के लक्ष्य को भी बढ़ाकर एक लाख से अधिक पदों पर भर्ती किया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने कहा, 'हम हर वर्ष समयबद्ध रूप से भर्ती परीक्षायें कराकर युवाओं को रोजगार देने का कार्य करेंगे। उन्होंने कहा, ''मैं सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में, कौशल उन्नयन के साथ ही 10 लाख से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जाने की घोषणा करती हूं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि यह बजट इस दृष्टिकोण के साथ पेश किया गया है कि 2047 का राजस्थान कैसा हो। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार जनता की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। बजट पेश किए जाने के बाद शर्मा ने मीडिया से कहा, ''हमारे बजट में हमने जो कहा है एक-एक बात को हम पूरा करेंगे क्योंकि हमारी 'डबल इंजन की सरकार है।

नीतिश ने किया पटना के मरीन ड्राइव के तीसरे फेस का उद्घाटन

पटना (ईएमएस)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को जेपी गंगा पाथवे के तीसरे चरण का उद्घाटन किया, जिसे पटना का मरीन ड्राइव भी कहा जाता है। दीघा से गायघाट तक 12.5 किलोमीटर की दूरी पहले से ही चालू है, और अतिरिक्त 4.5 किलोमीटर की दूरी का निर्माण किया गया है, इस पटना घाट तक बढ़ाया गया है। जेपी गंगा पाथवे एक महत्वपूर्ण परियोजना है जिसका उद्देश्य सिंगल-लेन अशोक राजपथ पर यातायात की भीड़ को कम करना है, जहां दोनों ओर घने निर्माण के कारण सड़क को चौड़ा करना संभव नहीं है।

नीतिश ने कहा, निर्माण पूरा होने के बाद लोगों को पटना जाने में काफी मदद मिलेगी। इससे लोगों का समय बचेगा और उत्तरी तरफ से आने वाले लोगों के लिए यह सुविधाजनक होगा। यह चार लेन की सड़क गंगा नदी के किनारे अशोक राजपथ के समानांतर चलती है, जो पश्चिम में दीघा को पूर्व में मालसलामी से जोड़ती है। तीसरे चरण के पूरा होने से यात्रियों को कंगन घाट के रास्ते पटना साहिब गुरुद्वारा तक बेहतर पहुंच मिलेगी। हालांकि, अशोक राजपथ से जुड़ने के लिए पटना घाट पर एप्रोच रोड का निर्माण अधूरा है। कंगन घाट पर एप्रोच रोड पूरा हो गया है और चालू हो जाएगा। जेपी गंगा पथ का पहला चरण, दीघा से पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (पीएमसीएच) तक, 24 जून, 2022 को चालू हो गया। दूसरा चरण, पीएमसीएच से गायघाट तक, 14 अगस्त, 2023 को यात्रियों के लिए खोला गया। दीघा से मालसलामी तक पथ की कुल लंबाई 20.5 किमी है, शेष 3.5 किमी पर स्तंभ स्थापना और खंड फिटिंग का काम चल रहा है।

ईडी का आदेश-यूटयूबर एल्विश 23 जुलाई को हाजिर हो

लखनऊ (ईएमएस)। मनी लॉन्ड्रिंग केस में प्रवर्तन निदेशालय ने यूटयूबर एल्विश यादव को 23 जुलाई को लखनऊ कार्यालय में पेश होने को कहा है। यह मामला रेव पार्टी में सांपों के जहर को नशे के रूप में इस्तेमाल करने को लेकर जुड़ा हुआ है। केंद्रीय एजेंसी ने मामले में मई 2024 मुकदमा दर्ज किया था। जानकारी के अनुसार, एल्विश को इस सप्ताह प्रवर्तन निदेशालय के ऑफिस में पेश होने को कहा गया था

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

मुम्बई (ईएमएस)। घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन मुनाफावसूली के कारण बाजार नीचे आया। आज कारोबार के दौरान धातु, वाहन और आईटी शेयरों में भारी गिरावट दर्ज की गयी। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई

मानक सूचकांक सेंसेक्स 129.72 अंक ऊपर आकर 80,481.36 के नए शीर्ष स्तर पर पहुंचने के बाद टूट गया और अंत में 426.87 अंक करीब 0.53 फीसदी नीचे आकर 79,924.77 अंक पर बंद हुआ।

वहीं दूसरी ओर 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का एनएसई निफ्टी भी शुरुआती कारोबार में रिकॉर्ड 24,461.05 पर पहुंचने के बाद 291.4 अंक तकरीबन 1.19 फीसदी की गिरावट के साथ 24,141.80 पर खिसक गया। अंत में यह 108.75 अंक या 0.45 फीसदी नीचे आकर 24,324.45 अंक पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स के 10 शेयर लाभ के साथ ही बंद हुए। एशियन पेंट्स, पावर ग्रिड, एनटीपीसी, अदाणी पोर्ट्स और भारती एयरटेल को सबसे अधिक लाभ हुआ। वहीं सन फार्मा, एचयूएल, टाइटन एक्सिस बैंक और बजाज फिनसर्व के शेयर भी बढ़े।

दूसरी ओर सेंसेक्स के 20 शेयर नुकसान के साथ ही नीचे आये हैं। इसमें एमएंडएम, टाटा स्टील, सीसीएस, एचसीएल टेक और एसबीआई के शेयर रहे है। इसके अलावा, जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा मोटर्स, कोटक बैंक, एचडीएफसी बैंक, इंफोसिस, इंडसइंड बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एलएंडटी, रिलायंस, नेस्ले इंडिया, अल्ट्राटेक सीमेंट, मारुति, आईटीसी, टेक महिंद्रा और बजाज फाइनेंस के शेयर नीचे आये।

इससे पहले आज सुबह बाजार की शुरुआत गिरावट के साथ हुई। निफ्टी50 और सेंसेक्स लाल निशान में कारोबार करते दिखे। इस प्रकार बीएसई सेंसेक्स 72 अंक गिरकर 80,280.22 पर और निफ्टी50 13 अंक गिरकर 24,42 0.30 पर आ गया। बीएसई पर मारुति और अदाणी पोर्ट्स शीर्ष लाभ वाले स्टॉक्स रहे, जबकि कोटक महिंद्रा बैंक और एमएंडएम शीर्ष हानि वाले स्टॉक्स रहे। वहीं दुनिया भर के बाजारों की बात करें तो एशियाई बाजारों में, शंघाई और हांगकांग नीचे आये जबकि सियोल और टोक्यो के शेयर बढ़े हैं। यूरोपीय बाजारों में बढ़त रही। वहीं अमेरिकी बाजारों में मिलाजुला कारोबार हुआ।

इस बार बजट में ज्यादा देसी माल का उपयोग बढ़ाने की हो सकती है घोषणा!

स्थानीय माल उपयोग करने वाले दूसरी श्रेणी के आपूर्तिकर्ता होते हैं। 20 फीसदी के कम स्थानीय सामग्री प्रयोग करने वाले को गैर स्थानीय आपूर्तिकर्ता कहा जाता है। सार्वजनिक खरीद आदेश के तहत इस श्रेणी को सबसे कम तवज्जो दी जाती है और कोई खास जरूरत पहली या दूसरी श्रेणी के स्थानीय आपूर्तिकर्ता पूरी नहीं कर पाते हैं तभी इन्हें ठेका दिया जाता है। एक सरकारी अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा ?कि विभिन्न मंत्रालयों के बीच बातचीत काफी आगे बढ़ चुकी है। आगामी बजट में इस प्रस्ताव का जिक्र हो सकता है

और इसे चरणबद्ध तरीके से लागू करने की योजना है। यह उपाय तब किया जा रहा है, जब बैंक ऑफ बड़ौदा ने

कुछ क्षेत्रों में सार्वज?निक खरीद के ?लिए बढ़ सकती है देसी सामग्री के उपयोग की न्यूनतम सीमा

नई दिल्ली (ईएमएस)। केंद्र सरकार इस बार के बजट में मेक इन इंडिया अभियान के जरिये देश में विनिर्माण को बढ़ावा देने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए स्थानीय सामग्री का उपयोग बढ़ाने का ऐलान कर सकती है। इसके तहत कुछ क्षेत्रों को छोड़कर बाकी में सार्वजनिक खरीद के लिए देसी सामग्री के उपयोग की न्यूनतम सीमा भी बढ़ा सकती है। फिलहाल जो कंपनियां कम से कम 50 प्रतिशत देसी सामग्री के साथ उत्पादन करती हैं, उन्हें पहली श्रेणी का आपूर्तिकर्ता कहा जाता है। उत्पादन, सेवा या कामकाज में 20 से 50 फीसदी

अनुमान जताया है कि वित्त वर्ष 2025 की निजी क्षेत्र ने जून तिमाही में केवल 44,300 करोड़ रुपये के नए निवेश की घोषणा की है।

यह 20 साल में सबसे कम आंकड़ा है। इससे भी कम निवेश की घोषणा जून 2005 में हुई थी। स्थानीय सामग्री की जरूरत बढ़ाए जाने से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी बढ़ सकता है क्योंकि विदेशी कंपनियों को सरकारी खरीद के बड़े और आकर्षक बाजार तक पहुंचने के लिये भारत में ठिकाना बनाना ही होगा। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन ने पिछले महीने कहा था कि 2023 में दुनिया भर में एफडीआई की आवक केवल 2 फीसदी घटी मगर भारत में यह 43 फीसदी घटकर 28 अरब डॉलर रह गई।

आरबीआई ने बैंकों को इंटरनल खातों के दुरुपयोग को लेकर दी चेतावनी

- इंटरनल खातों को कम कर सिर्फ जरूरी खातों को ही रखने को कहा

नई दिल्ली (ईएमएस)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकों को इंटरनल खातों के दुरुपयोग को लेकर चेतावनी जारी की है। इन खातों का उपयोग धोखाधड़ी और लोन चुकाने की अवधि बढ़ाने (एवरग्रीनिंग) में किया जा रहा है। आरबीआई ने पाया है कि कुछ बैंकों में बिना किसी वजह के बहुत सारे इंटरनल खाते हैं और इनका गलत कामों में उपयोग हो रहा है। आरबीआई ने बैंकों से इन खातों को कम कर सिर्फ जरूरी खातों को ही रखने को कहा है। साथ ही कहा है, बैंक इन खातों पर बेहतर नियंत्रण रखें, नियमित जांच करें और बोर्ड की ऑडिट समिति को रिपोर्ट दें।

रिज़र्व बैंक के डिप्टी गवर्नर स्वामीनाथन जे ने हाल ही में बैंकों को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले कुछ सालों में इंटरनल खातों के नियंत्रण और मैनेजमेंट पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है। हमें कुछ ऐसे बैंक मिले जिनके पास लाखों की संख्या में आंतरिक खाते हैं, जिनका कोई स्पष्ट कारण नहीं है। इनमें से कुछ खातों का उपयोग धोखाधड़ी और लोन चुकाने की अवधि बढ़ाने (एवरग्रीनिंग) के लिए भी किया जा रहा है। इंटरनल खाते दुरुपयोग की संभावना के चलते काफी जोखिम वाले होते हैं। इसलिए, उन्होंने मुख्य वित्तीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इन खातों को घटाएं और सिर्फ जरूरी खातों को ही रखें। साथ ही उन्होंने कहा ?कि बैंकों को इन खातों पर बेहतर नियंत्रण रखने के लिए नियमित जांच करनी चाहिए और बोर्ड की ऑडिट समिति को रिपोर्ट देनी चाहिए। आरबीआई ने ऐसे बैंकों को ही नहीं, बल्कि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को भी चेतावनी दी है। आरबीआई चाहता है कि एनबीएफसी अपने खुलासे (डिस्क्लोज़र) की गुणवत्ता बेहतर बनाएं, खासकर लोन चुका न पाने की आशंका के मामले में। इसके अलावा आरबीआई ने एसेट रीकंस्ट्रक्शन कंपनियों को भी दिशानिर्देश जारी किए हैं, ताकि वो प्रबंधन शुल्क और खर्चों के लिए सही प्रावधान रखें।

41 साल बाद पीएम मोदी पहुंचे ऑस्ट्रिया.....यह भावुक पल

नई दिल्ली (ईएमएस)। रूस के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑस्ट्रिया की ऐतिहासिक यात्रा की। तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में पीएम मोदी को ऑस्ट्रिया आने का मौका मिला। दरअसल, पीएम मोदी की ऑस्ट्रिया यात्रा ऐतिहासिक होने के साथ-साथ काफी विशेष भी है। बता दें कि 41 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने ऑस्ट्रिया का दौरा किया है।

इस बीच, बुधवार को ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में पीएम मोदी ने चांसलर कार्ल नेहमर के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की। ऑस्ट्रिया ने पीएम मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया, जिसका पीएम मोदी ने आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि मेरे तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही मुझे ऑस्ट्रिया आने का अवसर मिला।

पीएम मोदी ने कहा कि मेरी ये यात्रा ऐतिहासिक भी है और विशेष भी है। 41 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने ऑस्ट्रिया का दौरा किया है। ये भी सुखद संयोग है कि ये यात्रा उस समय हो रही है, जब हमारे आपसी संबंधों के 75 साल पूरे हुए हैं। बता दें कि पीएम मोदी और चांसलर नेहमर के बीच बहुत सार्थक बातचीत हुई। दोनों ही नेताओं ने आपसी सहयोग को और मजबूत करने के लिए नई संभावनाओं पर चर्चा की।

पीएम मोदी ने आतंकवाद के मुद्दे पर कहा कि मैंने और चांसलर नेहमर ने विश्व में चल रहे विवादों (चाहे यूक्रेन में संघर्ष हो या पश्चिम एशिया की स्थिति) पर विस्तार से बात की है। मैंने पहले भी कहा है कि यह युद्ध का समय नहीं है। उन्होंने कहा कि हम दोनों आतंकवाद की कठोर निंदा करते हैं। हम सहमत हैं कि ये किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं है।

ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में पीएम मोदी का गर्मजोशी से स्वागत हुआ। इसके बाद पीएम मोदी ने आभार प्रकट करते हुए कहा, ''मुझे खुशी है कि मेरे तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही मुझे ऑस्ट्रिया आने का अवसर मिला। मेरा यहां आना ऐतिहासिक भी है और विशेष भी। 41 साल बाद किसी भारतीय प्रधान मंत्री ने ऑस्ट्रिया का दौरान किया है।

स्वयंभू बाबा के अधिवक्ता ने क्यों कहा.....मायावती के बयान से अराजकता फैलेगी

हाथरस (ईएमएस)। हाथरस में सत्संग के बाद भगदड़ मचने के कारण 121 लोगों की हुई मौत के मामले में स्वयंभू बाबा के अधिवक्ता एपी सिंह ने पूर्व सीएम मायावती पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि बाबा को लेकर मायावती के बयान से अराजकता फैलेगी। उन्हें अपना बयान वापस लेना होगा।

उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री मायावती जी का बयान काफी दुखद है। वास्तव में यह उनकी डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के बनाए हुए संविधान पर विश्वास न करने वाली बात है। क्या गरीब मजदूर परिवार को आस्था, श्रद्धा और विश्वास के लिए अधिकार नहीं है? क्या वे भक्ति भाव नहीं कर सकते हैं? क्या समागम नहीं कर सकते हैं?

मायावती ने भोले बाबा नारायण साकार हरि के लिए एसआईटी की रिपोर्ट पर विश्वास नहीं है? क्या उन्हें उत्तर प्रदेश के आलाधिकारियों पर भरोसा नहीं? क्या उन्हें हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज पर भरोसा नहीं है? जो यह सवालिया निशान लगा रही हैं। बाबा घटना से आधे घंटे पहले निकल गए थे। उसके बाद भी उनपर आरोप लगाए जा रहे हैं। इससे वंचित समाज दुखी है। मायावती को अपना बयान वापस लेना चाहिए।

दरअसल, एसआईटी की जांच रिपोर्ट सामने आने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री व बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

मायावती ने कहा, हाथरस में सत्संग भगदड़ कांड में हुई, 121 निर्दोष महिलाओं व बच्चों आदि की दर्दनाक मौत सरकारी लापरवाही का जीता-जागता प्रमाण है। मायावती ने कहा, इस अति-जानलेवा घटना के मुख्य आयोजक भोले बाबा की भूमिका के संबंध में एसआईटी की खामोशी भी लोगों में चिंताओं का कारण है। साथ ही, उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई के बजाय बाबा को क्लीनचिट देने का प्रयास चर्चा का विषय है।

पीएम बनने के बाद पहली विदेश यात्रा, अमेरिका रवाना हुए कीर स्टार्मर

लंदन (ईएमएस)। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर भारी चुनावी जीत के बाद पदभार ग्रहण करने के बाद इस सप्ताह वाशिंगटन के लिए रवाना हुए। 61 वर्षीय स्टार्मर ब्रिटिश नेता बनने के बाद अपने पहली विदेशयात्रा पर अमेरिका की राजधानी में नाटो की 75वीं वर्षगांठ शिखर सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे। वह पश्चिमी सैन्य गठबंधन और रूसी आक्रामकता के खिलाफ यूक्रेन की लड़ाई के लिए ब्रिटेन के स्थायी समर्थन की पुष्टि करने वाले है। यह यात्रा स्टार्मर के सत्ता में पहले दो सप्ताहों में अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति की हलचल को जन्म देती है, साथ ही ब्रिटेन अगले सप्ताह एक यूरोपीय नेताओं के सम्मेलन की मेजबानी भी कर रहा है।

विदेश नीति विशेषज्ञ जेम्स स्ट्रॉन्ग ने बताया कि ब्रिटेन की पिछली कंजर्वेटिव सरकार यूक्रेन की सबसे कट्टर समर्थक थी, जो रूस के आक्रमण को विफल करने में मदद करने के लिए धन, हथियार और सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करती थी। स्टार्मर ने लेबर के तहत कीव के लिए निरंतर समर्थन का वादा किया है, और उम्मीद है कि वे नाटो बैठक में यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की को व्यक्तिगत रूप से उस संदेश की पुष्टि कर सकते है। स्टार्मर के रक्षा सचिव जॉन हेले चुनाव के बाद से पहले ही यूक्रेन का दौरा कर चुके हैं, और विदेश सचिव डेविड लैमी यूरोपीय नाटो सदस्यों का दौरा कर रहे हैं।

लेबर गठबंधन के प्रति प्रतिबद्ध है और रक्षा खर्च को जीडीपी के 2.5 प्रतिशत तक बढ़ाने के कंजर्वेटिवों के वादे की बराबरी करना चाहती है, जो नाटो के दो प्रतिशत के लक्ष्य से ऊपर है।

गुहार लगाती सरकारः पाकिस्तान में आतंकी अब सैनिकों का कर रहे अपहरण

पेशावर (ईएमएस)। पाकिस्तान भारत समेत दुनिया के कई मुल्कों में आतंकी एक्सपोर्ट करता है। लेकिन अब वहां से एक ऐसी खबर सामने आई है, जो हैरान करने वाली है। आतंकिस्तान के नाम से मशहूर पाकिस्तान में आतंकी अब सैनिकों को अपहरण करने लगे हैं। बीते दिनों तीन सैनिकों को आतंकी उठा ले गए। उन्हें छुड़ाने के लिए सरकार आतंकियों से गुहार लगा रही है। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के टांक जिले में पाकिस्तानी सैनिकों ने बाजार जाने के लिए एक कार किराये पर ली। उसमें सवार होकर पोस्ट से निकले ही थे। कोट आजम और कोट किला इलाके के बीच एक चौराहे पर हथियारबंद आतंकियों ने उन्हें रोक लिया। वे पहले से नाकेबंदी करके बैठे हुए थे। आतंकी इनमें से तीन सैनिकों को अगवा कर अपने साथ ले गए। इतना ही नहीं, उनके एटीएम कार्ड और पहचान पत्र कार चालक को सौंप दिए। कार चालक सामान्य नागरिक था। कार चालक ने बताया कि अपहरण के समय सैनिक छुट्टियों पर घर जा रहे थे। कार चालक ने सैनिकों का सामान कोट किला में एफसी प्राधिकारियों को सौंप दिया। इसके बाद सरकार उन सैनिकों को छुड़ाने की कोशिश कर रही है। सेना और सरकार की ओर से गुहार लगाई जा रही है।

बता दें कि खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के टांक जिले का है। यह इलाका पाकिस्तान के सबसे अशांत क्षेत्रों में से एक है। यहां आए दिन सेना पर हमले होते रहते हैं। लेकिन मंगलवार को तो गजब हो गया। पाकिस्तान में इस तरह का यह पहला मामला नहीं है। पिछले महीने टांक जिले में ही तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के आतंकवादियों ने कम से कम 13 मजदूरों को अगवा कर लिया था। पुलिस ने 9 मजदूरों को कुछ घंटों में छोड़ दिया, लेकिन चार मजदूर अभी भी उनके कब्जे में हैं। पुलिस ने बताया कि प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन टीटीपी ने तीन जुलाई को एक वीडियो जारी किया था, जिसमें चारों मजदूर पंजाब की मुख्यमंत्री मरयम नवाज से उनकी रिहाई सुनिश्चित कराने की अपील कर रहे हैं। वे अपनी जान को खतरा बता रहे हैं।

स्पेस स्टेशन ने भेजी विचित्र तस्वीर, निकल रही हरी चिंगारी

-वैज्ञानिक बोले-ये एलियन से जुड़ी कोई चीज नहीं है

वॉशिंगटन (ईएमएस)। अमेरिका के इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन ने विचित्र आभास दिखने वाली तस्वीर भेजी है। भेजे गए वीडियो में पहली नजर में यह किन्हीं तरंगों की तरह दिखता है और ऐसा लगता है कि हरी रोशनी से अगल-बगल से हरी चिनगारी निकल रही हों।

इस बारे में वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि ये एलियन से जुड़ी कोई चीज नहीं है बल्कि ये ऑरोरा बोरेलिस है जो धरती के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के पास देखी जाती हैं। आईएसएस ने यह वीडियो धरती से 400 किलोमीटर ऊपर की पॉजिशनिंग से बनाया है। ऑरोरा बोरेलिस को उत्तरी रोशनी के रूप में भी जाना जाता है, पृथ्वी से देखी गई सबसे जादुई प्राकृतिक घटनाओं में से एक है। अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) ने एक वीडियो साझा कर पृथ्वी की सतह को कवर करते हुए हरे रंग का अरोरा दिखाया है। आपको याद आ गई होगी नॉर्वे की वे हरी रोशनी जिसे देखने लोग नॉर्वे की कड़कड़ाती सर्दियों में वहां पहुंचते हैं। नवंबर से फरवरी तक उत्तरी लाइट्स को देखने के लिए टूरिस्ट वहां जाते हैं क्योंकि इस समय रातें सबसे लंबी होती हैं। लोग अक्सर फिल्मों और इंटरनेट पर दिखाई देने वाली इन हैरतअंगेज रंगीन रोशनी को देखने के लिए आर्कटिक क्षेत्र के दूर-दराज के देशों की यात्रा करते हैं।

रोशनी ऐसी दिखती है जैसे हरा कोहरा धरती को ढक रहा हो या कोई छाया हो जो अनजानी मगर खूबसूरत है, साथ ही सहमा भी देती है। यह टाइम-लैप्स वीडियो आईएसएस से लिया गया था, जो अपनी धरती से 250 मील (400 किलोमीटर) ऊपर स्थित है। कैप्शन में आईएसएस ने लिखा है कि उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध के पास जमीन से अक्सर देखा जाने वाला, ऑर्बिटरी प्रयोगशाला का बेहद खूबसूरत बिंदु यह मौका देता है कि इसे देख कहाहहहू, वीडियो को अब तक 35 हजार से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं। वैसे नासा अर्थ ने वीडियो पर टिप्पणी की है कि ये दृश्य कभी पुराने नहीं होते। एक यूजर ने तो यह लिखा कि वास्तव में प्रकृति में देखने लायक सबसे सुंदर, आश्चर्यचकित कर देने वाली एक बेहद खास बात। पृथ्वी एकमात्र ग्रह नहीं है जहां अरोरा बोरेलिस दिखाई देती है।

भारत ने जिम्बाब्वे को 23 रनों से हराया

हरारे : भारत और जिम्बाब्वे के बीच जारी पांच मैचों की टी20 सीरीज के तीसरे मैच में टीम इंडिया ने 23 रनों से जीत हासिल कर सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली है। इस मैच में जिम्बाब्वे की टीम कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई। सिकंदर रजा की टीम एक बार फिर गेंद और बल्ले से फ्लॉप साबित हुई। हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेले गए इस मुकाबले में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया और 20 ओवर में चार विकेट पर 182 रन बनाए। इस मुकाबले में शुभमन गिल ने अपने टी20 अंतराष्ट्रीय करियर का तीसरा अर्धशतक जड़ा। वहीं, ऋतुराज गायकवाड़ 49 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेलकर पवेलियन लौटे। जवाब में जिम्बाब्वे की टीम 20 ओवर में छह विकेट पर 159 रन बना सकी।

जिम्बाब्वे की शुरुआत इस मैच में झटके के साथ हुई। उन्हें पहला झटका आवेश खान ने मधवेरे के रूप में दिया। वह सिर्फ एक रन बना सके। इसके बाद विकेटों के गिरने का सिलसिला जारी रहा। सात ओवर के अंदर जिम्बाब्वे के पांच विकेट गिर गए। इस मैच में मारुमनी 13, बेनेट चार, रजा 15, कैंपबेल एक रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद मोर्चा मायर्स और मदांडे ने संभाला। दोनों के बीच छठे विकेट के लिए 77 रनों की साझेदारी हुई, जिसे सुंदर ने तोड़ा। उन्होंने मदांडे को आउट किया। वह 26 गेंदों में 37 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, मायर्स 49 गेंदों पर 65 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने 45 गेंदों में अपना पहला टी20 अंतरराष्ट्रीय अर्धशतक लगाया। इसके अलावा मसाकाद्जा 18 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत के लिए सुंदर ने तीन और आवेश ने दो विकेट चटकाए। वहीं, खलील के नाम एक विकेट रहा। जिम्बाब्वे को छठा झटका सुंदर ने दिया। उन्होंने मदांडे को आउट किया। वह 26 गेंदों में 37 रन बनाकर आउट हुए। मदांडे ने मायर्स के साथ छठे विकेट के लिए 77 रनों की साझेदारी निभाई। आठवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए मसाकाद्जा उतरे हैं। उनका साथ देने के लिए मायर्स क्रीज पर मौजूद हैं।

जिम्बाब्वे को पांचवां झटका वाशिंगटन सुंदर ने ही दिया। उन्होंने छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए जॉनथन कैंपबेल को आउट किया। वह सिर्फ एक रन बना सके। सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए क्लाइव मदांडे उतरे हैं। उनका साथ देने के लिए डियोन मायर्स क्रीज पर मौजूद हैं। जिम्बाब्वे को जीत के लिए 70 गेंदों में 136 रनों की जरूरत है। जिम्बाब्वे को चौथा झटका सिकंदर रजा के रूप में लगा। उन्हें वाशिंगटन सुंदर ने रिंकू सिंह के हाथों कैच कराया। वह सिर्फ 15 रन बना सके। जिम्बाब्वे के कप्तान का विकेट 34 रन के स्कोर पर गिरा। छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए जोनाथन कैंपबेल उतरे हैं।

जिम्बाब्वे को दूसरा और तीसरा झटका 19 रन के स्कोर पर लगा। तीसरे ओवर की चौथी गेंद पर खलील ने मारुमनी को आउट किया। वह 13 रन बना सके। वहीं, तीसरा झटका आवेश खान ने दिया। उन्होंने चौथे ओवर की पहली गेंद पर ब्रायन बेनेट को रवि बिश्नोई के हाथों कैच कराया।

सुप्रीम कोर्ट में टली समलैंगिक विवाह पर सुनवाई, जस्टिस संजीव खन्ना हुए केस से अलग

नई दिल्ली (ईएमएस)। सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाह मामले पर बुधवार को सुनवाई टल गई है। मामले पर सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर की गई थी। 5 जजों में से एक जज जस्टिस संजीव खन्ना ने व्यक्तिगत कारणों से खुद को सुनवाई से अलग किया है। दरअसल, पुरुष समलैंगिक अधिकार कार्यकर्ताओं को झटका देकर सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली 5 जजों की संविधान पीठ ने 17 अक्टूबर 2023 को समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने से इंकार कर दिया था।

सुप्रीम कोर्ट में जजों के चैंबर में बुधवार को पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई होनी थी। वहीं, अब मुख्य न्यायधीश डी वाई चंद्रचूड़ फिर से बेंच का गठन करने वाले है। सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने से इंकार करने संबंधी उसके पिछले साल के फैसले की समीक्षा के लिए दायर याचिकाओं पर खुली अदालत में सुनवाई करने की अनुमति देने से मना कर दिया था। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक लोगों के अधिकारों की जोरदार पैरोकारी की थी, ताकि अन्य लोगों को उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं को पाने में उन्हें भेदभाव का सामना न करना पड़े। इस दौरान कोर्ट ने उत्पीड़न एवं हिंसा का सामना करने वाले (ट्रांसजेंडर) समुदाय के लोगों को आश्रय देने के लिए सभी जिलों में गरिमा गृह और संकट की घड़ी में इस्तेमाल करने के लिए समर्पित हॉटलाइन नंबर की व्यवस्था करने को कहा था।

बुधवार को पांच जजों की बेंच को करना था विचार

सीजेआई चंद्रचूड़, जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस बी वी नागरत्ना और जस्टिस पी एस नरसिम्हा फैसले की समीक्षा का अनुरोध करने वाली याचिकाओं पर 10 जुलाई को अपने कक्ष में विचार करने वाले हैं।

पीओके और खैबर पख्तूनख्वा के लोगों को धमका रहे पाकिस्तान के मेजर जनरल

इस्लामाबाद (ईएमएस)। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा और पाक अधिकृत कश्मीर के अनेक इलाकों में आजादी की जंग तेज होती जा रही है। यहां तक कि स्थानीय लोगों ने पाकिस्तानी सेना के डायरेक्ट ऑपरेशन में भी आजादी संगठनों का साथ देना शुरू कर दिया है। स्थानीय लोगों ने पाकिस्तानी सेना के ऑपरेशन में जा रहे काफिले पर भी फायरिंग करनी शुरू कर दी है। वीडियो में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि मेजर जनरल काशिफ खलील स्थानीय लोगों को धमकी दे रहे हैं कि अब यदि ऐसा फिर हुआ तो ये स्थानीय लोगों को भी नहीं बख्शेंगे और उनकी फौज स्थानीय लोगों को भी मुंह तोड़ जवाब देगी। इस वीडियो में मेजर जनरल कह रहे हैं कि भले ही उन्हें स्थानीय समर्थन मिले या ना मिले लेकिन वह कथित आतंकवादियों के खिलाफ अपना अभियान जारी रखेंगे और जो लोग उनके साथ देंगे अब उनका भी पीछा किया जाएगा।

स्थानीय लोगों के खुले विरोध को देखते हुए पाकिस्तानी सेना के मेजर जनरल काशिफ खलील ने दो दिन पहले डायमेर इलाके में स्थानीय लोगों की बैठक बुलाई और इस बैठक में साफ तौर पर कहा कि स्थानीय लोग उनके साथ नहीं दे रहे हैं। यहां तक कि पाकिस्तानी सेना के जो काफिले आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई करने जा रहे हैं उन पर भी जगह-जगह स्थानीय लोगों द्वारा गोली चलाई जा रही है। इससे जुड़ा एक वीडियो भी सामने आया है। पाकिस्तान का यह वरिष्ठ अधिकारी इस वीडियो में साफ तौर पर स्थानीय लोगों को धमकाता नजर आ रहा है। यहां मेजर जनरल काशिफ खलील कह रहे हैं कि रिश्तेदारी वहां चलती है जब तक उनका लड़का आतंकवादी संगठन में शामिल नहीं हो जाता। आतंकवादी संगठन में शामिल होने के बाद कोई रिश्तेदारी नहीं चलती। पाकिस्तानी सेना का दावा है कि उसने पिछले 6 महीने के दौरान खैबर पख्तूनख्वा में 560 टारगेट ऑपरेशन किए हैं। इस दौरान 279 आतंकवादियों को मार गिराया है।

अफगानिस्तान में क्रिकेट की जीत के जश्न मनाने पर आईएस आतंकी हुए आगबबूला

काबुल (ईएमएस)। अफगानिस्तान में तालिबान सरकार के खिलाफ लगातार हमले कर रहे इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रांत आतंकी संगठन ने आतंकी क्रिकेट की जीत पर देश में जश्न मनाने पर बौखला गए हैं। आईएसकेपी से जुड़े अल अजीम मीडिया ने एक 19 मिनट का प्रोपेगेंडा वीडियो जारी किया है। अल अजीम ने दावा किया कि क्रिकेट मुस्लिमों के खिलाफ पश्चिमी देशों का एक बौद्धिक युद्ध है जिसे पश्चिमी देशों ने शुरू किया है। आईएसकेपी से जुड़े संगठन ने दलील दी कि क्रिकेट देश के मुस्लिमों में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को मजबूत करता है जो इस्लाम के जिहाद के एजेंडे के खिलाफ है। अज अजीम ने तालिबान की भी जमकर आलोचना की। अल अजीम ने कहा कि तालिबान सरकार अफगान क्रिकेट टीम को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने खासतौर तालिबानी विदेश मंत्री मुत्ताकी के क्रिकेटर राशिद खान को फोन करने की आलोचना की। आईएसकेपी के आतंकियों ने पाकिस्तान के क्रिकेटर से नेता बने इमरान खान का हवाला दिया। उसने दलील दी कि पश्चिमी देश इसके जरिए अपने मोहरों को बढ़ावा दे रहे हैं, फिर उन्हें राजनीति में ला देते हैं। इस वीडियो में निष्कर्ष के तौर पर मुस्लिम युवकों से अपील की गई है कि वे क्रिकेट या मनोरंजन के किसी रूप में शामिल होने की बजाय आईएस में शामिल हों।

इजरायल के खिलाफ कुछ बड़ा करने में जुटा ईरान ,सैटेलाइट तस्वीरों में खुलासा

तेहरान (ईएमएस)। फिलिस्तीन में इजरायली सेना के ताबड़तोड़ हमले के बीच ईरान कई बार इजरायल को धमकी देता रहा है? लेकिन अब खुफिया सैटेलाइट से ली गई ईरान की कुछ तस्वीरें सामने आई हैं, इसके बाद शक हो रहा है कि ईरान कोई बड़ी तैयारी तो नहीं कर रहा। ये तस्वीरें ईरान की राजधानी तेहरान से सटे मोडारेस और खोजिर इलाके की हैं, जहां दो बड़े कारखानों में खूब हलचल दिख रही है। इन सैटेलाइट तस्वीरों को लेकर अमेरिका की भी नजर टेढ़ी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, इन कारखानों में बैलेस्टिक मिसाइलें और ड्रोन बनाए जाते हैं और हाल के कुछ महीनों में ये काफी बड़े हुए हैं। इसमें यह भी दावा किया गया है कि यहां बनने वाली मिसाइलें रूस के अलावा हिजबुल्लाह को दी जा रही हैं, जबकि ड्रोन हूति विद्रोहियों को सप्लाई हो रहे है। इस रिपोर्ट में दो अमेरिकी शोधकर्ताओं के हवाले से कहा गया है कि ये सैटेलाइट तस्वीरें वहां मिसाइल उत्पादन के बढ़ावे को दिखाती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान के तीन सीनियर अधिकारियों ने भी इसकी पुष्टि की है।

रिपोर्ट के मुताबिक, रूस ने यूक्रेन युद्ध छिड़ने के बाद अक्टूबर 2022 में ईरान से मिसाइल सप्लाई के डील की और उसके बाद ही इस मिसाइल कारखानों में विस्तार देखा गया। वहीं अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, तेहरान यमन के हूती विद्रोहियों और लेबनानी मिलिशिया हिजबुल्लाह को भी मिसाइलें देता है। ये दोनों ही इजरायल के खिलाफ ईरान के सपोर्ट वाले प्रतिरोध की धुरी (एक्सिस ऑफ रेजिस्टेंस) के सदस्य हैं। मार्च में मोदारेस आर्मी बेस और अप्रैल में खोजिर मिसाइल फैसिलिटी की ली गई तस्वीरों में दोनों जगहों पर 30 से ज्यादा नई इमारतें दिखाई दे रही हैं। ये दोनों ही तेहरान के पास स्थित हैं।

एक्सपर्ट का कहना है कि ईरान का शस्त्रागार पहले से ही मध्य पूर्व में सबसे बड़ा है। ऐसा माना जाता है कि इसमें 3,000 से ज्यादा मिसाइलें हैं, जिसमें पारंपरिक और परमाणु हथियार ले जाने के लिए डिजाइन किए गए मॉडल भी शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार ईरानी अधिकारियों ने कंफर्म किया कि पारंपरिक बैलिस्टिक मिसाइलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए मोडारेस और खोजिर में इन कारखानों का विस्तार किया जा रहा है। यहां कुछ नई इमारतों का इस्तेमाल ड्रोन बनाने के लिए किए जाते हैं और इससे ईरान का ड्रोन उत्पादन दोगुना हो सकता है। सूत्र ने बताया कि ये ड्रोन इजरायल पर लगातार हमले कर रहे हूति विद्रोहियों और मिसाइलें हिजबुल्लाह को दी जाएगी।

गुजरात में मौसम की अब तक 25 फीसदी बारिश, सबसे अधिक सौराष्ट्र में 34.94 प्रतिशत

अहमदाबाद (ईएमएस) गुजरात में मानसून के आगमन के बाद कहीं मूसलाधार तो कहीं मध्यम बारिश का दौर जारी हैं सौराष्ट्र में मौसम की सबसे अधिक बारिश हुई हैं राज्य में मौसम की अब तक 25 प्रतिशत औसत बारिश हुई हैं स्टेट इमर्जसी ऑपरेशन सेंटर से मिली जानकारी के मुताबिक सौराष्ट्र जोन में मौसम की 34.94 प्रतिशत बारिश हुई हैं वहीं कच्छ में 34.85 प्रतिशत, दक्षिण गुजरात में 27.21 प्रतिशत, उत्तर गुजरात में 17.75 प्रतिशत और पूर्व-मध्य जोन में सबसे कम 16.32 प्रतिशत मौसम की बारिश हुई हैं राज्य के ज्यादातर जिलों में अब भी अपेक्षित बारिश का इंतजार हैं राज्य के जिन जिलों में अच्छी बारिश हुई है, वहां बड़ी मात्रा में जलराशि का संग्रह हुआ हैं जानकारी के मुताबिक राज्य के 2 जलाशयों में 90 प्रतिशत से अधिक पानी हैं वहीं 3 जलाशयों में 80 से 90 प्रतिशत, 6 जलाशयों में 70 से 80 प्रतिशत, 195 जलाशयों में 70 फीसदी से भी कम पानी हैं राज्य के 207 जलाशयों में कुल 38.76 प्रतिशत पानी हैं जिसमें उत्तर गुजरात के 15 जलाशयों में 25.69 प्रतिशत, मध्य गुजरात के 17 जलाशयों में 40.42 प्रतिशत, दक्षिण गुजरात के 13 जलाशयों 34.29 प्रतिशत जलराशि हैं सौराष्ट्र में अच्छी बारिश बारिश होने से कई जलाशय छलक गए हैं जिसमें जामनगर का वागडिया, सुरेन्द्रनगर का वणसल डेम छलक गए हैं सौराष्ट्र के 141 जलाशयों में 23.32 प्रतिशत जल राशि हैं कच्छ के 20 जलाशयों में 20.89 प्रतिशत पानी हैं जबकि गुजरात के जीवनदायिनी सरदार सरोवर नर्मदा बांध में 50.04 प्रतिशत जलराशि हैं

एसओजी ने नवा यार्ड क्षेत्र के एक मकान में रेड कर बड़ी मात्रा में संदिग्ध मांस बरामद किया

वडोदरा (ईएमएस) स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने पूर्व सूचना के आधार पर शहर के नवा यार्ड क्षेत्र के एक मकान में छापा मारकर बड़ी मात्रा में मांस बरामद किया हैं मांस किस पशु का इसकी जांच के लिए सैंपल एफएसएल भेज दिए गए हैं

जानकारी के मुताबिक एसओजी ने पूर्व सूचना के आधार पर वडोदरा के नवा यार्ड क्षेत्र के रसूलजी चाली के एक मकान में सुबह के वक्त छापा मारा छापेमारी के दौरान एसओजी को मकान से करीब 100 किलो जितना संदिग्ध मांस बरामद हुआ स्थानीय लोगों में चर्चा है कि बरामद किया गया मांस गौवंश का हैं हांलाकि बरामद मांस गौवंश का है या नहीं इसकी जांच के लिए एसओजी ने सैंपल एफएसएल भेज दिया हैं एफएसएल की जांच के बाद स्पष्ट हो जाएगा कि मांस किस पशु का हैं

किसान की नाबालिग बेटी के साथ शख्स ने किया गलत काम

ॠकधेॅधगकछक, १० प๗ॐकश्चष ॡ

गुजशत के डीसा से एक शख्स ने नाबालिग लड़की का अपहरण कर उसे गिरफ्तार किया। १७ साल की सघीश खेशलु स्थित कोल्ड सेंटर के पास खड़ी थी। उसी दौशन डिसा का रहने वाला संजय शठौड़ नाम का शख्स सघीश को बहला-फुसलाकर भगा ले गया। फिर उसे अहमदाबाद के एक फार्म हाउस में ले जाया गया और उसके साथ रेप किया गया।

देश के कई राज्यों सहित गुजरात में भी रेप की घटनाएं सामने आना आम बात हो गई है। इस तरह अब गुजरात के खेशलू से ऐसी घटना सामने आई है। बता दें कि डीसा से एक शख्स किसान की नाबालिग बेटी को अपहरण कर उसे अहमदाबाद ले गया और वहां जाकर उसका बलात्कार किया।

नाबालिग लड़की खेशलू की निवासी है , लड़की का नाम सघिश बताया जा रहा है, सघिश के पिता ने घटना के बाद शिकायत दर्ज कराई और अब पुलिस ने आशेपी को पकड़ लिया है।

घटना के बारे में मिली जानकारी के मुताबिक, १७ साल की सघीश खेशलु स्थित कोल्ड सेंटर के पास खड़ी थी। उसी दौशन डिसा का रहने वाला संजय शठौड़ नाम का शख्स सगीश को बहला-फुसलाकर भगा ले गया। फिर उसे अहमदाबाद के एक फार्म हाउस में ले जाया गया और उसके साथ जबरदस्ती कर रेप किया गया। सघीश ने इसके बाद अपने पिता को पूरी घटना की जानकारी दी है।

पीड़िता के पिता ने खेशलु पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता की मेडिकल जांच कराई, जिसके बाद आशेपी संजय शठौड़ को गिरफ्तार कर लिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

इससे पहले गुजशत के अशवली जिले में ४ साल की बच्ची से रेप का ऐसा मामला सामने आया था जिसे सुनकर आपकी रूह कांप जाएगी। जहां ३५ साल के दरिंदे ने पड़ोस में रहने वाली चार साल सकी लड़की के साथ पहले बलात्कार किया फिर उसकी हत्या कर दी। पुलिस ने इस मामले में आशेपी को पकड़ लिया।

सूरत एयरपोर्ट पर अनोखी तकनीक से १५ बाश दुबई से गोल्ड लाया

सूरत, १० जुलाई ।

सूरत के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप ने जहांगीरपुरा से पकड़े गए ६५ लाख रुपए के सोने के मामले में फिर से एक बार एयरपोर्ट के सिक्युरिटी चेकिंग को लेकर सवाल खड़े हुए हैं। बता दें कि यह सोना दुबई से लाया गया था। उसे इस तरह से बैग के अंदर छुपाया था, जिससे वह मेटल डिटेक्टर में डिक्टेट ही नहीं हो पाया। सोना तस्करी के मुख्य सरगना ने कबूल किया कि अब तक १५ बार इस तरह से सोने की स्मगलिंग करवा चुका है।

९२७ ग्राम सोना दंपती दुबई से जिस तरह लेकर आए थे। उनकी अनोखी तकनीक से सभी लोग हैरान है। जानकारी के मुताबिक एक्स रेजिया नाम के केमिकल के साथ पेस्ट बनाने के बाद उसे स्प्रे के जरिए बैग के पिछले हिस्से में रैक्जिन और रबड़ की शीट के बीच में एक नई लेयर बनाकर लाया गया था।

पकड़े गए मुख्य आरोपी अब्दुल ने पुलिस को बताया कि उसने अब तक १५ बार इस तरह से ट्रिप लगवाई है। पुलिस की माने तो १५ बहुत ही काम आंकड़ा बताया गया है। इससे ज्यादा बार आरोपी सोना दुबई से भारत लाया है। आकलन किया जाए तो करीब करीब १० किलो सोना इस तरह से अब्दुल दुबई से मंगवा चुका है।

पुलिस ने बताया कि इस अनोखी तकनीक के चलते मेटल डिटेक्टर में गोल्ड डिटेक्ट नहीं कर पाया। ऐसे में ये आरोपी एयरपोर्ट से बचकर निकलने में कामयाब हो गए। अब्दुल ने सोना बड़ौदा के सोनारों को बेचा है। उसे प्रति किलो १० लाख रुपए का मुनाफा मिला था।

स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप द्वारा पकड़े गए गोल्ड स्मगलिंग में चारों आरोपी अब्दुल समद, फिरोज नूर, नईम सालेह और उसकी पत्नी उमैमा सालेह द्वारा अधिवक्ता नदीम चौधरी के माध्यम से जमानत अर्जी दाखिल की गई है। जिस पर बुधवार को सुनवाई होनी है। पुलिस इस मामले में दुबई के इस पूरे रैकेट का ऑपरेट करने वाले तथा सोने की डिलीवरी लेने वालों को ढूंढ रही है। सूरत एयरपोर्ट पर अब तक ३५ करोड़ के करीब सोने के स्मगलिंग के मामले सामने आए हैं। इससे पहले भी कस्टम का एक अधिकारी प्रीति आर्य को भी स्मगलिंग के रैकेट में ही लापरवाही दिखाने के मामले में सस्पेंड किया गया था।

जर्जर इमारतों को लेकर एसएमसी सख्त, कई संपत्तियां सील की और पानी और ड्रेनेज कनेक्शन काटे

सूरत (ईएमएस) सूरत में जर्जर इमारतों पर सूरत महानगर पालिका (एसएमसी) ने बड़ी कार्रवाई की हैं सूरत के उधना में जैनब मंजिल के 10 फ्लैट सील कर दिए गए हैं साथ ही पानी और ड्रेनेज के कनेक्शन भी काट दिए गए हैं उधना ही नहीं बल्कि शहर के रांदेर, लिंबायत समेत विभिन्न इलाकों में जर्जर इमारतों में रहने वाले लोगों को नोटिस जारी किया गया है और ड्रेनेज कनेक्शन काट दिए गए हैं। मिली जानकारी के मुताबिक एसएमसी ने सूरत में जान जोखिम में डालकर जर्जर मकानों में रहने वाले लोगों को कई बार मकान खाली करने के नोटिस जारी किए हैं। लेकिन फिर भी लोग बिल्डिंग खाली नहीं कर रहे हैं आखिरकार एसएमसी ने सख्त रुख अपना लिया हैं जानकारी के मुताबिक उधना में जैनब मंजिल के 10 जर्जर फ्लैट्स को सील कर दिया गया हैं पानी और ड्रेनेज के कनेक्शन भी काट दिए गए हैं साथ ही दीनदयाल अपार्टमेंट के एक फ्लैट को भी सील कर दिया गया हैं साल 2022 से संपत्ति खाली करने और बिल्डिंग की मरम्मत करने का नोटिस जारी किया गया था नोटिस की अनदेखी करने पर अब ऐसी संपत्तियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी गई है। सूरत के रांदेर जोन स्थित स्वामीनारायण कॉम्प्लेक्स पर भी कार्रवाई की गई हैं नगर पालिका ने जर्जर कॉम्प्लेक्स के जल निकासी कनेक्शन काट दिए हैं। नगर पालिका ने 803 जीर्ण-शीर्ण हो चुकी हैं 78 संपत्तियों की मरम्मत की है और 486 संपत्तियों को ध्वस्त कर दिया है। एसएमसी के एक अधिकारी के मुताबिक 239 संपत्तियां अब भी खतरनाक स्थिति में हैं

नकली कपासिया तेल बेचने वाले दो व्यापारी गिरफ्तार

सूरत : कुछ समय पहले शहर में नकली घी और पनीर मिलने के बाद अब लिंबायत इलाके में डुप्लीकेट बिनौला तेल (कपासिया तेल) के डिब्बे बरामद हुए हैं। पुलिस ने नकली तेल बेचने वाले दो व्यापारियों को गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

शिकायतकर्ता भूषण महेंद्र दानी, एनके प्रोटीन्स के मालिक ने पुलिस को सूचना दी कि उनकी कंपनी के कपासिया तेल की नकल कर सूरत में बेचा जा रहा है। दुकानदार कॉपीराइट कानून का उल्लंघन कर रहे थे।

शिकायत के आधार पर, पुलिस ने जांच शुरू की और पाया कि लिंबायत क्षेत्र के दुकानदार विभिन्न कंपनियों के कपासिया तेल के15 किलो के डिब्बे लाते थे और उन पर लगे स्टीकर और ढक्कन हटा देते थे। इसके बाद, वे उन डिब्बोंपरएनकेप्रोटीन्सकंपनीके तिरूपति कपासियातेल के स्टीकर लगाकर नकली तेल बेचते थे। पहली नजर में, डिब्बे असली लगते थे, जिसके कारण कई दुकानदार एनके प्रोटीन्स ब्रांड का दुरुपयोग कर नकली तेल बेच रहे थे।

स्टूडेंट्स को पीटने-छेड़छाड़ करने वाले टीचर की पिटाई

जूनागढ, १० जुलाई ।

जूनागढ़ जिले के पलासवा गांव के प्राथमिक विद्यालय के एक टीचर की अभिभावकों ने जमकर पिटाई कर दी। टीचर पर आरोप है कि वह लड़कों को पाइप, चप्पलों और जूतों तक से पीटता था। इसके अलावा वह गलत इरादे से छात्राओं को गले भी लगा लेता था।

टीचर की मारपीट से डरकर कई बच्चे स्कूल जाने से मना करते थे। इसी के चलते आज सुबह कई अभिभावक इकट्ठा होकर स्कूल जा पहुंचे और क्लास से निकालकर टीचर की जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद अभिभावक टीचर को हटाए न जाने तक स्कूल बंद रखने की जिद पर अड़े थे। गुस्साए लोगों ने स्कूल में ताला भी जड़ दिया था।

जब पूरा मामला जूनागढ़ तालुका प्राथमिक शिक्षा अधिकारी तक पहुंचा, तो वह पलासवा गांव पहुंचे। उन्होंने अभिभावकों और गांव के नेताओं से बात की और उन्हें शिक्षक के मामले में उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। तब जाकर अभिभावक माने।

गांव में रहने वाले रहीश रसिक ने कहा- बच्चों ने हमें बताया कि स्कूल में गोविंद सर छात्रों के साथ बहुत मारपीट करते हैं और छात्राओं को भी गलत तरीके से छूते हैं। टीचर छोटी-छोटी सी बातों पर लड़कों को पीटता था। अब तो वह अपने जूतों और चप्पलों से भी बच्चों को पीटने लगा था। इसी डर से बच्चे स्कूल आने से डरते थे। और भी बच्चों ने यही बात बताई।

इसी के चलते आज हम सभी अभिभावक स्कूल पहुंचे। हम टीचर के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हैं। प्रभारी शिक्षा अधिकारी तालुका प्राथमिक शिक्षा अधिकारी जयश्रीबेन भिंभा ने कहा कि कक्षा में स्कूल के प्रिंसिपल का फोन आने के बाद मैं और शिक्षा निरीक्षक आज सुबह यहां पहुंचे। स्कूल के शिक्षक के बारे में अभिभावकों और ग्रामीणों द्वारा शिकायत की गई। लेकिन इस मामले में पहले कोई लिखित या मौखिक शिकायत नहीं की गई थी। अभिभावकों की पूरी बात सुनी जाएगी और उच्च स्तर पर रिपोर्ट तैयार कर प्रशासन को सौंपी जाएगी।

ससुराल से मांगने वाला था फिरौती, पुलिस ने ४८ घंटे में चलती ट्रेन से रेस्क्यू किया

सूरत, १० जुलाई ।

गुजरात के सूरत शहर में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक पिता ने कर्ज चुकाने के लिए अपने ही ५ साल के बेटे का अपहरण करा दिया। आरोपी ने ये साजिश ससुराल वालों से रुपए एंठने के लिए रची थी। हालांकि, पुलिस ने मामले का पर्दाफाश कर दिया और ४८ घंटे के भीतर ही बच्चे को चलती ट्रेन से रेस्क्यू कर लिया।विज्ञान नगर डिंडोली में रहने वाले आरोपी ताराचंद ने बेटे को अपने दोस्त के साथ भेजने के बाद डिंडोली पुलिस थाने में अपहरण का मामला दर्ज कराया था। ताराचंद ने अपनी शिकायत में लिखाया कि रविवार रात ९:३० बजे सोसाइटी में खेलते हुए उसका ५ साल का बेटा अचानक गुम हो गया।

पुलिस ने बच्चे की खोजबीन शुरू की। इस दौरान सीसीटीवी खंगाले। एक सीसीटीवी में एक बच्चे टहलते हुए दिखा तो ताराचंद ने उसे ही अपना बेटा बता दिया। क्राइम ब्रांच ने उस बच्चे को ढूंढ निकाला तो पता चला कि वह उसका बेटा नहीं है। इससे पुलिस को ताराचंद पाटिल पर शक हुआ। उसका क्रॉस एग्जामिनेशन किया तो आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया।

आरोपी ताराचंद अपने माता-पिता के साथ गांव में रहना चाहता था, लेकिन उसकी पत्नी उनके साथ नहीं रहना चाहता थी। इससे ताराचंद ने अपने बेटे का अपहरण कराकर अपने ससुराल से पैसे तो लेना ही चाहता था, साथ ही पत्नी को लापरवाह बताकर पिता के घर पर रहने को मजबूर भी करना चाहता था।

पुलिस के मुताबिक आरोपी ने व्यापार और घर बनाने के साथ अन्य कई कारणों से बैंक से ९ लाख रुपए का पर्सनल लोन लिया था। कोरोना काल में उसका व्यापार ठप पड़ गया था। वह और उसकी पत्नी दोनों बीमार भी रहने लगे थे। बीमारी के पीछे बहुत पैसे खर्च हो गए थे। इस कारण वह लोन की किस्त नहीं चुका पा रहा था।अपहरण की जानकारी मिलने पर हमने सीसीटीवी खंगालना शुरू किया। एक फुटेज में एक बच्चा नजर आया, जिसे आरोपी ने अपना बेटा बताया। पुलिस बच्चे को ट्रेस कर जब ले आई, तब आरोपी ने कहा कि वह उसका बेटा नहीं है। इससे शंका हुई तो आरोपी का क्रॉस एग्जामिनेशन किया। सख्ती से वह घबरा गया और उसकी योजना फेल हो गई। आरोपी का ससुराल पक्ष पैसे वाला है। बच्चे का अपहरण कर वह अपने ससुरालियों को इमोशनल ब्लैकमेल कर पैसे निकलवाना चाहता था।

आरोपी ३२ वर्षीय ताराचंद उत्तम पाटिल ने अपनी बहन ज्योति रविंद्र ठाकरे और दोस्त करण मनोहर वाकोडे के साथ मिलकर अपने ही बेटे के अपहरण की योजना बनाई। बच्चे को अपने दोस्त करण को सौंप दिया और बुलढाणा के जामुर गांव में अपनी बहन के घर भेज दिया। पुलिस ने आरोपी ताराचंद सख्ती से पूछताछ की तो उसने सारा सच उगल दिया।

उसके बाद शहर पुलिस ने रेलवे पुलिस की मदद ली और ह्यूमन इंटेलिजेंस व टेक्निकल वर्कआउट के जरिए करण मनोहर वाकोडे की लोकेशन ट्रेस की। और उसे नंदुरबार से चलती ट्रेन में बच्चे के साथ पकड़ लिया। वह बच्चे को लेकर बुलढाणा जा रहा था। उसके बाद बच्चे को डिंडोली पुलिस को सौंप दिया गया है। आरोपी के दो बेटे और एक बेटी है।

निर्मला सीतारमण का डीपफेक वीडियो शेयर करना पड़ा महंगा

अहमदाबाद, १० जुलाई ।

गुजरात पुलिस ने जीएसटी पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का एक डीपफेक वीडियो साझा करने के आरोप में एक व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। वीडियो को चिराग पटेल अपने एक्स हैंडल पर शेयर किया था। एक्स प्रोफाइल के अनुसार पटेल अमेरिका में रहता है। वीडियो क्लिप में सीतारमण को वस्तु एवं सेवा कर को गोपनीय सूचना कर बताते हुए दिखाया गया है।

गुजरात पुलिस ने जीएसटी पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का डीपफेक वीडियो शेयर करने वाले चिराग पटेल के खिलाफ एफआइआर दर्ज की है। राज्य के गृह मंत्री हर्ष संघवी के निर्देश पर केस दर्ज कर जांच की जा रही है।

डीपफेक वीडियो क्लिप में सीतारमण मीडिया से बात करती हुई दिखाई दे रही हैं और गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स को गोपनीय सूचना टैक्स बता रही हैं।

ये हमारा गोपनीय सूचना टैक्स जीएसटी है कि हम टैक्स कितना कमाए हैं। इसलिए डेटा रिलीज नहीं कर सकते हैं क्योंकि जियो इंटरनेट धीमा हो गया है। इस बार जुलाई में सारे डेटा की धुलाई हो गई है सारे डेटा में छेद हो गये हैं। उस छेद के लिए हमें खेद है। यह वीडियो आठ जुलाई को शेयर किया गया था।

अंग्रेजी भाषा में सीतारमण यह कहते सुनी जा सकती हैं कि आप सभी सरकार की निजता का सम्मान करें। जीएसटी की ७वीं सालगिरह पर यह घोषणा करती हूं कि सरकार अपने डेटा रिलीज नहीं करेगी क्योंकि यह हमारा बिजनेस है, हम कोई खाता या जिम्मेदारी प्रदर्शित नहीं करेंगे।

प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री ने कहा था आपके पास दो भैंस हैं तो एक कांग्रेस लेकर जाएगी, इसलिए सरकार कहती है कि आपके पास दो पैसा है तो दोनों हम जीएसटी के नाम पर लेकर जाएंगे। क्योंकि जीएसटी से देश का विकास होता है। आप एक भैंस कांग्रेस को दे सकते हैं तो दो भैंस विकास को भी दे सकते हैं। वीडियो को चिराग पटेल अपने एक्स हैंडल पर शेयर किया था। एक्स प्रोफाइल के अनुसार, पटेल अमेरिका में रहता है।

एवरेस्ट कंपोजिट्स प्रा. लिमिटेड ने क्रांतिकारी फाइबरोड एफआरपी रिबर्स का अनावरण किया: निर्माण उद्योग की संरचना में बदलाव

1991 से मिश्रित उत्पादों का निर्माता, एवरेस्ट कंपोजिट्स प्राइवेट लिमिटेड (ईसीपीएल), अपने अभूतपूर्व उत्पाद, फाइबरोड - एफआरपी रिबर्स के लॉन्च की घोषणा करते हुए गर्व महसूस कर रहा है। निर्माण प्रौद्योगिकी ईंर्ध्ंिं में एक ऐतिहासिक छलांग - ईंझ सरिया अद्वितीय स्थायित्व, स्थायित्व और बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करते हैं, जो सिविल इंजीनियरिंग संरचनाओं में सुदृढीकरण सामग्री के लिए एक नया मानक स्थापित करते हैं। अपनी मजबूत तकनीकी क्षमताओं और अनुकूलनशीलता के लिए प्रसिद्ध, ईसीपीएल निर्माण उद्योग में नवाचार और उत्कृष्टता का पर्याय बन गया है। फाइबरोड - एफआरपी रिबर्स गुणवत्ता और प्रदर्शन के उच्चतम मानकों को पूरा करने वाले नवीन निर्माण समाधान और नवीन औद्योगिक उत्पाद प्रदान करने की कंपनी की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। फाइबरोड - एफआरपी रिबर्स की शुरूआत ईसीपीएल के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, क्योंकि यह निर्माण परियोजनाओं को शुरू करने के तरीके में एक आदर्श बदलाव का प्रतीक है। पारंपरिक सुदृढीकरण सलाखों के विपरीत, फ़ाइब्रोड एफआरपी सरिया बेहतर संक्षारण प्रतिरोध, उच्च शक्ति-से-वजन अनुपात और गैर-चुंबकीय गुण प्रदान करते हैं, जो उन्हें विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए आदर्श बनाते हैं। ईसीपीएल के डसीईओ - बिजनेस डेवलपमेंट.जयमीत शाह ने कहा, ठहम फाइबरोड - एफआरपी रिबर्स का अनावरण करते हुए रोमांचित हैं, एक उत्पाद जो निरंतर नवाचार के लिए हमारी फर्म की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है।ठ ''अपने बेजोड़ स्थायित्व, संक्षारण प्रतिरोध और स्थापना में आसानी के साथ, ईंर्ध्ंिं ईंझ सरिया पारंपरिक सुदृढीकरण के लिए लागत प्रभावी और टिकाऊ विकल्प प्रदान करके निर्माण उद्योग में क्रांति लाने के लिए तैयार हैं। भारत के तेजी से बढ़ते बुनियादी ढांचे के विकास के बीच, एफआरपी सरिया जैसे नवीन समाधानों की मांग निश्चित रूप से अपनी छाप छोड़ेगी। यह जो अवसर प्रदान करता है वह न केवल विकास का वादा करता है, बल्कि राष्ट्र के निर्माण परिदृश्य के लिए सतत प्रगति का भी वादा करता है।ठ

पश्चिम रेलवे ने अप्रैल-जून, 2024 में गहन टिकट जांच अभियानों के दौरान जुर्माने के रूप में प्राप्त किये 52 करोड़ रुपये

पश्चिम रेलवे पर सभी वैध यात्रियों को आरामदायक यात्रा और बेहतर सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए मुंबई उपनगरीय लोकल ट्रेनों, मेल/एक्सप्रेस के साथ-साथ पैसेंजर ट्रेनों और हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों में बिना टिकट/अनियमित यात्रियों पर अंकुश लगाने के लिए लगातार गहन टिकट जांच अभियान चलाए जा रहे हैं। पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ वाणिज्य अधिकारियों की देखरेख में अत्यधिक प्रेरित टिकट जांच टीम द्वारा अप्रैल से जून, 2024 के दौरान कई टिकट जांच अभियान चलाए गए, जिससे 52.14 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त की गई, जिसमें मुंबई उपनगरीय खंड से प्राप्त 14.63 करोड़ रुपये भी शामिल हैं।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार जून, 2024 के दौरान बिना बुक किए सामान के मामलों सहित 2.25 लाख बिना टिकट/अनियमित यात्रियों का पता लगाकर 14.10 करोड़ रुपये की राशि वसूल की गई। इसके अलावा भी जून में पश्चिम रेलवे ने मुंबई उपनगरीय खंड पर 1 लाख से अधिक मामलों का पता लगाकर 4.35 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला गया। एसी लोकल ट्रेनों में अनधिकृत यात्रा को रोकने के लिए नियमित औचक टिकट जांच अभियान चलाए जाते हैं। इन अभियानों के परिणामस्वरूप अप्रैल से जून, 2024 में लगभग 13000 अनधि कृत यात्रियों पर जुर्माना लगाया गया है और जुर्माने के रूप में लगभग 43.64 लाख रुपये वसूल किये गये। पश्चिम रेलवे ने आम जनता से हमेशा उचित और वैध टिकट के साथ यात्रा करने की अपील की है।

मानसून से निपटने के लिए वडोदरा मण्डल पूरी तरह से है तैयार

वडोदरा मण्डल में पहली बार कवर किये हुए नालों और कल्वर्टों के सर्वेक्षण और निगरानी के लिए फ्लोटर कैमरों का उपयोग किया जा रहा है

पश्चिम रेलवे ने मानसून से पहले की विभिन्न तैयारियों के लिए मिशन मोड पर काम शुरू किया है, साथ ही मैकेनिकल, सिग्नलिंग, इलेक्ट्रिकल संपत्तियों और उपकरणों आदि का उचित रख-रखाव भी किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे ने सुनिश्चित किया है कि सभी कार्य निर्धारित लक्ष्य के भीतर पूरे कर लिए गए हैं। इससे वर्तमान मानसून के दौरान सुचारू और व्यवधान मुक्त ट्रेन सेवाएं सुनिश्चित हो सकेंगी।

वडोदरा मण्डल के वरिष्ठ मंडल इंजीनियर , समन्वय श्री सुमित ठाकुर ने बताया कि आगामी मानसून के दौरान मण्डल पर निर्बाध रेल सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए, विभिन्न मानसून तैयारी संबंधी कार्यो के लक्ष्यों का सावधानीपूर्वक पालन किया गया और वडोदरा मण्डल ने इन कार्यो को समय से पहले पूरा कर लिया है। पुलियों, नालों और ड्रेनों की सफाई और गाद निकालना, पटरियों के किनारे की गंदगी और कचरा साफ करना, अतिरिक्त जलमार्गो का निर्माण, उच्च शक्ति वाले पंपों की स्थापना, पेड़ों की छंटाई आदि जैसे कार्य मिशन मोड पर पूरे किए गए हैं।

इस वर्ष, वडोदरा मण्डल ने उन पुलियों और पुलों की तस्वीर लेने के लिए रिमोट ऑपरेटेड फ्लोटर कैमरे तैनात किए हैं, जिन तक मैन्युअल रूप से पहुंचना संभव नहीं है। भारतीय रेल में ऐसा पहली बार किया जा रहा है। इन रिमोट ऑपरेटेड कैमरों में इनबिल्ट लाइटिंग सिस्टम है जो अंधेरे में भी भूमिगत पुलियों की स्पष्ट तस्वीरें प्राप्त करने में मदद करता है। उन तस्वीरों की मदद से पुलियों की सफाई की जा रही है।

आगे जानकारी देते हुए, श्री ठाकुर ने कहा कि वडोदरा मण्डल ने 129 पुलियों की सफाई पूरी कर ली है और लगभग 168 किलोमीटर नालों की सफाई की गई है। साथ ही, यार्डों में पानी के प्रवाह पैटर्न का अध्ययन किया गया और पानी के सुचारू निकास के लिए नई नालियों और मैनहोल का निर्माण किया गया है। पुलिया की गहरी सफाई सुनिश्चित करने के लिए सक्शन/डी-स्लजिंग मशीन का उपयोग किया गया है। पुलियों और नालों में चोक पॉइंट्स की निगरानी, सफाई और पहचान के लिए बाढ़ संभावित स्थानों का ड्रोन सर्वेक्षण किया गया है।

श्री ठाकुर ने यह भी बताया कि पिछले मानसून के अनुभव के आधार पर रेलवे परिसर में फ्लड प्रोन की आशंका वाले क्षेत्रों की पहचान की गई है और इन स्थानों पर विभिन्न एहतियाती कार्य पूरे किए गए हैं। पटरियों की स्थिति की निगरानी के लिए पेट्रोलमैन और ब्रिज गार्ड द्वारा मानसून गश्त की जा रही है । मानसून और प्रतिकूल मौसम की चेतावनी के दौरान नगर निगमों के आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के साथ निकट समन्वय सुनिश्चित किया गया है । नगर निकायों से भी अनुरोध किया गया है कि वे पटरियों के किनारे स्थित कॉलोनियों और झुग्गी-झोपड़ियों के निवासियों को पटरियों पर सीवरेज/कचरा/अपशिष्ट जल के निपटान को रोकने के लिए जागरूक करें।

पश्चिम रेलवे का वडोदरा मण्डल निरंतर निगरानी सुनिश्चित कर रहा है और यात्रियों के लिए व्यवधान मुक्त यात्रा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

नगर निगम ने सोलर पैनल लगाकर 6.18 करोड़ रुपये की बचत की!

सूरत : सूरत नगर निगम ने अपने कार्यालयों और संपत्तियों पर सोलर पैनल लगाकर बिजली उत्पादन की दिशा में एक बड़ी पहल करते हुए सालाना 6.18 करोड़ रुपये की बचत की है। नगर निगम की करीब 65 संपत्तियों पर सोलर पैनल लगाए गए हैं। सूरत नगर निगम बनासकांठा में भी 10 मेगावाट का सोलर प्लांट लगाने जा रहा है। इससे नगर निगम को बिजली खर्च में और भी अधिक राहत मिलेगी। नगर निगम ने स्वेज पंपिंग स्टेशनों पर स्थापित सोलर पैनलों के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण में उल्लेखनीय सफलता हासिल की

सती पॉली प्लास्ट लिमिटेड का आईपीओ 12 जुलाई 2024 को खुलेगा

सती पॉली प्लास्ट लिमिटेड एक आईएसओ प्रमाणित कंपनी है जो लचीली पैकेजिंग सामग्रियों के निर्माण में लगी हुई है जो बहुक्रियाशील हैं और विभिन्न उद्योगों की पैकेजिंग आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। कंपनी विभिन्न लचीली पैकेजिंग आवश्यकताओं के लिए संपूर्ण समाधान प्रदान करती है। सती पॉली प्लास्ट लिमिटेड ने सार्वजनिक पेशकश के माध्यम से धन जुटाने के लिए एनएसई इमर्ज के साथ एक रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया है। कंपनी 13,35,000 नए इक्विटी शेयर जारी करेगी। आईपीओ 12-16 जुलाई 2024 तक खुला रहेगा।

सती पॉली प्लास्ट लिमिटेड आईपीओ का विवरण:कुल इक्विटी शेयर- 13,35,000, मूल्य बैंड - रु. 123-130 अंकित मूल्य- 10 रु, लॉट साइज़- 1000, क्यूआईबी कोटा - 6,32,000 इक्विटी शेयर (एंकर कोटा सहित),

एचएनआई कोटा - 1,90,000 इक्विटी शेयर, खुदरा कोटा- 4,43,000 इक्विटी शेयर, मार्केट मेकर कोटा - 70,000 इक्विटी शेयर, आईपीओ का आकार - ?17.36 करोड़ (उच्च मूल्य बैंड पर)

लिस्टिंग - एनएसई इमर्ज. कंपनी निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए इश्यू से शुद्ध आय आवंटित करने की योजना बना रही है: 1. कार्यशील पूंजी की आवश्यकता, 2. सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य

हम बीज से लेकर कटाई तक किसानों का साथ देना चाहते हैं – गोदरेज एग्रोवेट

वडोदरा,10 जुलाई, 2024: गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड के बीज व्यवसाय ने हाल ही में अपने चैनल भागीदारों के लिए आयोजित एक बैठक में तीन नए उत्पादों के लॉन्च की घोषणा की। कंपनी ने मक्का और धान के लिए हाइब्रिड (संकर) बीजों के अपने मौजूदा पोर्टफोलियो काविस्तारकरते हुए, मक्का में जीएमएच 6034तथाजीएमएच4110 और धान में नव्या के लॉन्च की घोषणा की।

इसतरहकंपनीकीअपनीशानदारअनुसंधानएवंविकासकीक्षमताओं का लाभ उठाने और जलवायु के अनुकूल हाइब्रिड विकसित करने की दिशा में प्रयास जारी रखने पर ध्यान केंद्रित करनेकीनीतिकीपुष्टिहोतीहै। ये लॉन्च, भारतीय किसानों की सेवा और उत्थान के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को और दृढ़ करते हैं।

गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड के फसल संरक्षण व्यवसाय के मुख्यकार्यकारी, राजावेलु एन.के. नेइसव्यवसाय पर अपनी टिप्पणी मेंकहा, ''गोदरेज एग्रोवेट में, हमारा प्रयास हैकि ऐसे समाधान पेश कियेजाएं जो उपज बढ़ाने में किसानों की मदद करें। हमबीज उद्योग में उनकुछकंपनियोंमेंसेएकहैंजिनकेपासअपनीअनुसंधान एवं विकास इकाईहैऔरऐसेमेंहमारे फसल संरक्षण व्यवसाय के साथ,हमारा लक्ष्य किसानों को बीज से कटाई तक सहायता प्रदान करना।

राजवेलु एन.के. ने कहा, ठहमारे अधिकांश हाइब्रिड बीज सूखे, बीमारी और गिरने कीस्थितिसहन कर सकतेहैं। हमारे मौजूदा हाइब्रिडबीज किसानतथा चैनल भागीदार दोनों कोपसंदआरहेहैंऔरहम बीजों कोपैक करने तथाकिसानों को बेचने से पहले की इनकीगुणवत्ता सुनिश्चित करना जारी रखेंगे।ठ

कंपनी आने वाले महीनों में बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु और तेलंगाना राज्यों में मक्का में जीएमएच6034और जीएमएच 4110और धान में नव्या लॉन्च करेगी जिन्हेंआंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में पहलेहीपेशकियाजाचुकाहै।

पश्चिम रेलवे - वडोदरा मंडल

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की मरम्मत

ई- निविदा सूचना / E-TENDER NOTICE NO: - M137_MECH_PRTN_TEND_24_12 DTD : 04.07.2024 भारत के राष्ट्रपति के लिए ओर उनकी ओर से, मुख्य कारखाना प्रबंधक, कैरिज एवं वैगन मरम्मत कारखाना, पश्चिम रेलवे, नीचे दिए गए विवरण के अनुसार ई-निविदा आमंत्रित करते हैं : **कार्य का नाम :** प्रतापनगर कारखाना के सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (MBR टाइप) की मरम्मत करना। **कार्य की अनुमानित कीमत :** रु 267000/- (रूपए दो लाख सड़सठ हज़ार केवल) **बयाना राशि जमा करने हेतु :** रु. 5340/- (रूपए पांच हजार तीन सो चालिस केवल) **निविदा दस्तावेज़ शुल्क :** शून्य **कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 02 माह **प्रस्ताव की वेद्यता :** 90 दिन **निविदा जमा करने व खोलने की तिथि व समय :** बीडींग दि. 02-08-2024 को 15:00 बजे बंद होगी व उसी दिन 15:30 बजे खोली जाएगी. **वेबसाइट का पता / स्थान जहाँ सम्पूर्ण जानकारी देखी जा सकती है :** मुख्य कारखाना प्रबन्धक का कार्यालय, प्रतापनगर पश्चिम रेलवे 390004 **वेबसाईट :** www.ireps.gov.in 111

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे - अहमदाबाद डिवीजन

विद्युत कार्य

ई-निविदा सूचना संख्या. : Sr.DEE/ADI/25(24-25) दिनांक : 05.07.2024 (1) निविदा संख्या : EL-50-1-ADI- T-36-2024-25 **कार्य का नाम :** अहमदाबाद मण्डल - ईआई संस्थापना के लिए एयर कंडीशनर के प्रावधान संबंधित बिजली कार्य। **अनुमानित लागत :** ₹1,84,37,738/- **बयाना राशि :** ₹2,42,200/- **(2) निविदा संख्या :** EL-50-1-ADI- T-37-2024-25 **कार्य का नाम :** अहमदाबाद असारवा, भचाऊ, चांदलोडिया, हिम्मतनगर स्टेशन पर 8 नग यात्री लिफ्ट उपलब्ध कराने संबंधित बिजली कार्य। **अनुमानित लागत :** ₹1,75,21,540/- **बयाना राशि :** ₹2,37,600/- **(3)निविदा संख्या** EL-50-1-ADI-T-38-2024-25 **कार्य का नाम :** अहमदाबाद ऊंझा, वटवा, वीरमगाम स्टेशन पर 8 नग यात्री लिफ्ट उपलब्ध कराने संबंधित बिजली कार्य। **अनुमानित लागत :** ₹ 1,76,54,560/- **बयाना राशि :** ₹2,38,300/- **सभी निवदाओ के लिए निविदा प्रपत्र जमा करने की आखिरी तारीख एवं समय :** 30.07.2024 को 15:00 बजे तक **निविदा प्रपत्र खुलने की तारीख एवं समय :** 30.07.2024 को 15:30 बजे. **ऑफिस का पता :** सीनियर मण्डल बिजली इंजीनियर. डी. आर. एम. ऑफिस, चामुंडा पुल के पास, जी.सी.एस. अस्पताल के सामने, नरोड़ा रोड, अमदुपुरा, अहमदाबाद - 382345 **वेब साइट का पता :** www.ireps.gov.in 106

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

WESTERN RAILWAY - VADODARA DIVISION

INTERVIEW OF PART TIME DENTAL SURGEON ON CONTRACT BASIS VADODARA DIVISION (WR)

Engagement of Part Time Dental Surgeon on Contract basis (for four hours)at Divisional Railway Hospital, Pratpanagar, Vadodara.

In view of above, Divisional Railway Hospital Pratapnagar Vadodra (WR) will be conducting a **WALK- IN-INTERVIEW** for filling up the posts of Part Time Dental Surgeon for four hours per day and six days in a week

Details of the Post, Age limit, Remuneration and Date of interview as under:

Sr. No	Category	Total Vacancy	SC	ST	OBC	UR	EWS	Age as on issue of date of notification	Remuneration in Rs. Per Month	Date of Interview
1	Part Time Dental Surgeon	01	00	00	00	01	00	Less than 53 years	₹36900/-	18-07-2024 (Thursday)

II) **Age Relaxation :** 5 years for SC/ST and 3 years for OBC as per extant rules.

Visit:- **www.wr.indianrailways.gov.in** for more details of notification and term and conditions.

CONTACT ADDRESS : AUDITORIUM DIVISIONAL RAILWAY HOSPITAL WESTERN RAILWAY PRATAPNAGAR VADODARA-04 119

Like us on: facebook.com/WesternRly • Follow us on: twittter.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे - वडोदरा मंडल

शुद्धिपत्र

शुद्धिपत्र संख्या : 1 **निविदा संख्या :** CPM-GSENGG-BRC-02-24-25(खुली निविदा) समापन तिथि/समय 07/08/ 2024 15 :00 **कार्य का नाम :** वडोदरा डिवीजन : वडोदरा - गेरतपुर सेक्शन पर किमी 471/16-18 पर LC संख्या 294 के स्थान पर एप्रोच रोड सहित रोड ओवर ब्रिज(आरओबी)का निर्माण **संशोधित आइटम फ़ील्ड का नाम : निविदा समापन तिथि समय : मौजूदा मूल्य :** 23/07/2024 15:00 **संशोधित मूल्य :** 07/08/2024 15:00 **बोली प्रारंभ तिथि : मौजूदा मूल्य :** 09/07/2024 **संशोधित मूल्य :** 24/07/2024 115

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

मालिक, मुद्रक-प्रकाशक व सम्पादक : लक्ष्मीचन्द जी. अग्रवाल द्वारा ब्रिजाशा ऑफसेट, सरसपुर, अहमदाबाद में मुद्रित करवाकर, स्वेतप्रित बिल्डिंग, खासवाड़ी, बहुचराजी रोड़, वड़ोदरा से प्रकाशित किया। प्रात:कालीन E-mail: janhitaishi@yahoo.co.in Mob.9375504122 R.N.I. 64278/96